Book chap - 22-23

हिंदी साहित्य एवं मानवीय मूल्य

संपादक
डॉ. गणेशचंद्र शिंदे
डॉ. संदीप एस. पाईकराव
डॉ. साईनाथ ग. शाहू

Scanned with CamScanner

परिकल्पना

© सम्पादकाधीन

प्रथम संस्करण : 2022

ISBN : 978-93-95104-08-1

मूल्य : ₹ 995

शिवानंद तिवारी द्वारा *परिकल्पना*, के-37, अजीत विहार, दिल्ली-110084
से प्रकाशित और शेष प्रकाश शुक्ल, दिल्ली से टाइप सेट होकर
काम्पैक्ट प्रिंटर्स, दिल्ली-110032 में मुद्रित

Scanned with CamScanner

15. मानवीय और संवैधानिक मूल्यों की आवश्यकता 79
—डॉ. शिवाजी भदरगे
16. मूल्यों के अधःपतन की कहानी, आपहुदरी 83
—डॉ. वर्षा मोरे-पावडे
17. गीताश्री के कथासाहित्य में मानवीय मूल्य 87
—प्रा. वाघमारे मनिषा पंढरी
18. जया जादवानी के कथा साहित्य में मानवीय मूल्य 92
—प्रा. मंजुषा संदिपानराव कोल्हे
19. बदलते मानवीय मूल्यों में वृद्ध विमर्श 96
—जाधव नीता बाबु
20. शिवमूर्ति के कहानियों में मानवीय मूल्य 98
—शाहीन बेगम महमद गौस
21. समाज सुधार में मानवीय मूल्यों का योगदान 102
—महेर दीपाश्री मुकेशभाई
22. हिंदी भक्तिकालीन काव्य में मानव-मूल्य 107
—सुश्री आरती गुडधे
23. संत साहित्य में मानवीय मूल्य 111
—डॉ. पुष्पा गोविंदराव गायकवाड
24. साहिर लुधियानवी की शायरी में मानवीय मूल्य 117
—डॉ. जयराम सूर्यवंशी
25. हिंदी साहित्य में मानवीय मूल्य 122
—डॉ. रेविता बलभीम कावळे
26. 'साकेत' महाकाव्य में मानवीय मूल्य 127
—प्रा. डॉ. ज्ञानेश्वर गंगाधरराव गाडे/ डॉ. संतोष येरावार
27. दलित साहित्य में मानवीय मूल्य 131
—डॉ. जयप्रकाश नागला
28. अज्ञेय' की कहानियों में जीवन मूल्य 135
—प्रा. डॉ. डमरे मोहन मुंजाभाऊ
29. साहित्य और मानवीय मूल्य 141
—डॉ. सुनील गुलाबसिंग जाधव
30. रामदरश मिश्र के उपन्यायों में मानवीय मूल्य 147
—प्रा. डॉ. जी. बी. उषमवार

Scanned with CamScanner

रामदरश मिश्र के उपन्यायों में मानवीय मूल्य

प्रा. डॉ. जी. वी. उषमवार
हिंदी विभाग,
श्री सिद्धेश्वर महाविद्यालय,
माजलगाव, जि. बीड

भारतीय साहित्य भारत के समाज का दर्पण है। भारत देश यह ग्रामों में बसता है और इसी ग्रामीण संस्कृति को साहित्य में अभिव्यक्ति मिलती है। सही मायने में लोगों द्वारा रचा गया था हम यह कह सकते है कि परंपरा से चले आ रहे लोकगीत, लोक परंपरा, रूढ़ियां, तीज त्यौहारों में गाये जानेवाले गीत यह सभी लोक साहित्य के अंतर्गत आते है। इसी लोक साहित्य के माध्यम से ही हमारी संस्कृति, परंपराएँ एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी को मिलती है। लोक साहित्य के माध्यम से ही हमारे मानवीय मूल्य को हम हमारे पीढ़ी को सोचते हैं तथा इन मूल्यों का संवर्धन करते है।

हमें यहां यह देखना जरूरी हो जाता है कि 'लोक' शब्द की व्युत्पत्ति या अर्थ क्या है? 'लोक' शब्द की व्युत्पत्ति प्राचीन काल से आगे बढ़ती हुई दिखाई देती है। आधुनिक काल में लोक शब्द को विविध रूपों में प्रयुक्त किया गया है। 'श्लोक' शब्द का समानर्थी (Folk) फोक शब्द प्रचलित है।

इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका में, '"फोक' का भाव आदिम जाति के उन सभी व्यक्तियों का बोधक है। जिनसे वह समुदाय बना है। यदि इस शब्द का व्यापक अर्थ ले तो यह सभ्य राष्ट्र की समग्र जनसंख्या के लिए प्रयोग में आ सकता है।"[1]

डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय के मतानुसार, "आधुनिकता सभ्यता से दूर अपने प्राकृतिक परिवेश में निवास करनेवाली तथा कथित अशिक्षित और असंस्कृत जनता को लोक कहते है। जिनका आचार विचार एवं जीवन परंपरा युक्त विषयों से नियंत्रित होता है।"[2] उपरोक्त परिभाषा से हमें लोक शब्द के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। 'लोकसाहित्य' के बारे में आचार्य द्विवेदी के शब्दों में ऐसा माना जाता है कि, "जो चीज लोक चित्र से सीधे उत्पन्न होकर सर्वसाधारण को आलोकित चालित और प्रभावित करता है वे ही लोक साहित्य, लोकशिल्प, लोकनाट्य, लोककथा आदि नामों से पुकारे जा सकते हैं।"[3] रवींद्र भ्रमर के अनुसार, "लोक साहित्य लोक मानस की सहज और स्वभाविक अभिव्यक्ति है। यह अलिखित ही रहता है और अपनी मैखिक परंपरा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक आगे बढ़ता रहता है। इस साहित्य के रचयिता का नाम अज्ञात रहता है।"[4]

Scanned with CamScanner

लोक साहित्य यह मानवीय जीवन की बातों या परंपरा से चली आयी मौखिक गीतों द्वार संस्कृति, परंपरा तथा मूल्यों को एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी तक प्रवाहित करता है। यह स्थिति लोक साहित्य के माध्यम से हिंदी उपन्यासों में अंकित हुई है। रामदरश मिश्र के उपन्यासों में लोकसाहित्य के माध्यम से मानवीय मूल्यों को किस तरह संरक्षित किया गया है वह प्रकृत निम्न लिखित संदर्भ में हमें मिलता है। 'पानी के प्राचीर' उपन्यास में फाल्गुन महीने की होली, चैत्र का मेला, सावन की नागपंचमी आदि से सम्बधित भले-बुरे अनुभवो के साथ परिवेशगत चित्र उपस्थित होता है। कई लोग त्यौहारों की असली खुशियों को भूलकर ऊपरी धिंगाधिंगी में फँस जाते है। उपन्यास का नीरु अच्छाई की दृष्टी से और एकता की भावना की दृष्टि से होली का महत्व बताता है, "भाइयों होली में हमें पुरानी और सड़ी गली चीजों को डालना चाहिए। होली में अपने पुराने गम को बैर भाव को जलाते हैं, और नया जीवन शुरू करते है। यह उपला लोगों का जीवन है, इसे होली में डालना गुनाह है।"[5] प्रस्तुत संदर्भ इस में होली जैसे त्यौहार का मानवीय जीवन से सकारात्मकता का भाव लेना चाहिए ऐसे उत्सवों से हमे ऐक्य साधक,प्रेम के पोषक, प्रसन्नता के प्रेरक,धर्म को संरक्षक और भावों के संवर्धक का कार्य करते है जो कि हमारे संस्कृतिक मूल्यों की पहचान है।

'जल टूटता हुआ' उपन्यास में मास्टर सुग्गन को अपनी बेटी का गीत सुनाई देता है, "हरी-हरी पवन बहे पुरवाईया, नदिया डोले ए हरी"[6] इस गीत में इस तरह साल की गीता के भीतर उपनती मौन नदी मस्त पवन के साथ डौल रही है। गरीबी मास्टर अपनी लडकी की शादी नहीं कर पा रहा है। गीता के गीत में मानो उसके अन्तर की मौन नदी ही पुरवाईया के झोकों से हर हरा उठी हो। इसमें एक विवाह योग्य लडकी की करुण तड़प को इस गीत के माध्यम प्रकट किया है। यहाँ यह बात की ओर दृष्टि डालनी चाहिए की मर्यादा वश वह अपनी सारी इच्छाओं का दमन करती है।

डॉ. रामदरश मिश्र के 'जल टूटता हुआ' में लोक साहित्य के माध्यम से विविध संदर्भों में विभिन्न व्यक्तियों द्वारा गाये गए लोकगीत कही सुखात्मक, दुःखात्मक अनुभूतियों को प्रकट करते है तो कहीं सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों को उजागर करते हैं। उपन्यास में मास्टर सुग्गन यह लोकसाहित्य लोक गीतों के माध्यम से स्कूल के बच्चों में मानवीय मूल्यों की शिक्षा देते दिखाई देते है:

"छोड़ दिया सारा सुख अपना
तोड़ दिया फुलों का सपना
हे मुसकाते भाल भारत के।"

भारत के उज्ज्वल भविष्य का रूप में हम आज जिन बच्चों को देखते हैं। वह बच्चे इसलिए गाते हैं ताकी उन्हें बाबू साहब ने लाई हुई टोकरी भर मिठाई मिलनेवाली है। इस हेतु वह गाते हैं।

धार्मिक मूल्यों की अभिव्यक्ति लोक साहित्य के माध्यम से होती है। 'सूखता हुआ

Scanned with CamScanner

तालाब' में चित्रित पात्र है 'शिवलाल' उसके घर हरिवेश-पुराण कथा एवं कीर्तन आदि का प्रयोजन होता है। उसकी आन्तरिकता में धार्मिकता बाहसे तत्व है। सच्चा यथार्थ तो यह है कि एक तो आजकल खेतों में कोई काम नहीं है, दूसरे उसके पुत्र रामलाल की शादी हुए कई वर्ष हो गए, कोई बच्चा आज तक नहीं हुआ है। अतः यह सोचा गया है कि शायद ईश्वर प्रसन्न हो ही जाए। गांव में ईश्वर की आराधना में व्यस्त हुआ। यहाँ यह लोक गीत तथा कीर्तन लोगों के जीवन को मुखरित करता है :

"मोहे पनघट पै नन्दलाल छोड़ी गयो रे
आके मोरी नाजुक कलाइया मरोरि गयो रे
हां, मरोरि गयो रे... ।"[8]

ग्रामीण लोकसाहित्य में लोकगीतों के रूप में पूजा-पाठ, कीर्तन एवं कथाएँ होने को आज भी होती हैं। लेकिन उनकी सात्विकता, पवित्रता वह नहीं है जो पहले थी।

लोकसाहित्य यह पूरी तरह लोगों के जीवन पद्धतियों पर आधारित साहित्य है। लोगों द्वार बोली जाने वाली बोली, उनके द्वारा गाये जाने वाले गीत उत्सवों तथा त्यौहारों में खेले जानेवाले लोक नाटक, कहानी, कहावते जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी हमारी संस्कृति के वाहक हैं। इन्हीं के माध्यम से हमारे अलिखित नियम, मूल्य परंपरा, रूढ़ी आदि एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी तक प्रवाहित किए जाते हैं। लेकिन आज हम आपने लोक संस्कृति को ही भूल चुके हैं। रामदरश मिश्र के उपन्यासों में लोक साहित्य, लोक गीतों के माध्यम से उन परंपराओं को जीवित रखने का प्रयास किया है।

संदर्भ

1. इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, पृ. 518
2. लोक साहित्य की भूमिका, डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, पृ. 28
3. साहित्य की महत्ता प्रेरक निबंध, महावीर प्रसाद द्विवेदी
4. लोक साहित्य के सिद्धांत एवं परंपरा, डॉ. राम शर्मा, राजेश्वर पुजा, चतुर्वेदी
5. पानी के प्राचीर, डॉ. रामदरश मिश्र, पृ. 5
6. जल टुटता हुआ, डॉ. रामदरश मिश्र, पृ. 287
7. जल टुटता हुआ, डॉ. रामदरश मिश्र, पृ. 7
8. सूखता हुआ तालाब, डॉ. रामदरश मिश्र, पृ. 518

Scanned with CamScanner

EHVTL-22

On the occasion of Diamond Jubliee Year 2022-23

Shri Sharda Bhavan Education Society's

YESHWANT MAHAVIDYALAYA, NANDED

The Best College Award (2021) by SRTMU, Nanded,
College with Potential for Excellence (CPE), (Status Awarded By UGC),
Reaccredited with "A" Grade (III Cycle), NAAC, Bengaluru,
DST-FIST Sponsored College.

A Two day Inter-lingual, International Conference

on

"ETHICS AND HUMAN VALUES THROUGH LITERATURE" (EHVTL-22)

16th and 17th December, 2022

CERTIFICATE

This is to certify that Prof./Dr./Mrs./Mr. प्रा. डॉ. जी. बी. उषमवार

of श्री सिद्धेश्वर महाविद्यालय, माजलगाव जि.बीड

has participated in the Two Day Inter-lingual, International Conference on **"ETHICS AND HUMAN VALUES THROUGH LITERATURE" (EHVTL-22)** jointly organized by **the Departments of English, Hindi, Marathi and Urdu, Yeshwant Mahavidyalaya, Nanded and SRTM University, Nanded** on December, 16th - 17th, 2022.

He /She has attended/ presented a paper entitled

रामदरश मिश्र के उपन्यायों में मानवीय मूल्य

Organizing Secretary	Organizing Secretary	Organizing Secretary	Organizing Secretary	Convener & Chief Organizer
Dr. L. V. Padmarani Rao	Dr. Sandip S. Paikrao	Dr. S. M. Durrani	Dr. Sanjay Jagtap	Dr. G. N. Shinde
Head, Department of English	Head, Department of Hindi	Head, Department of Urdu	Head, Department of Marathi	Principal

Scanned with CamScanner

नवीन शैक्षणिक धोरण : वर्तमानातील वास्तव

बळीराम शेषेराव चव्हाण
संशोधक
पीएच.डी. राज्यशास्त्र

डॉ . सुहास रंगनाथ मोराळे
प्राचार्य व संशोधन मार्गदर्शक
श्री. सिद्धेश्वर महाविद्यालय,
माजलगाव, जि.बीड

प्रस्तावना :

देशात महाराष्ट्राची ओळख ही, पुरोगामी विचाराचा पाईक असणारा राज्य म्हणून आहे. महाराष्ट्राची सामाजिक जडण-घडण व अभिसरण महात्मा फुले, शाहू महाराज, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या शिक्षण, विचार व प्रबोधनातून झालेली आहे. त्याशिवाय विद्रोही संत परंपरेच्या सांस्कृतिक अभिसरणातूनही झालेली आहे. या अभिसरणातून शिक्षण प्रवाहाचा जन्म झाला; त्यामुळे शिक्षण हा आपला जन्मसिद्ध हक्क आंहे. आपल्या मानवी समाजात समानता, शांतता, समता आणि बंधुता प्रस्थापित करण्यासाठी शिक्षण हे प्रमुख आणि शक्तिशाली साधन आहे. शिक्षण ही एक सामाजिक प्रक्रिया आहे; जिथे आपण एकाच वेळेला शिकवतो आणि शिकतो. महात्मा फुले म्हणतात की,

विद्ये विना मती गेली । मती विना नीती गेली ।
नीती विना गती गेली । गती विना वित्त गेले ।
वित्ता विना शूद्र खचले । इतके अनर्थ एका अविद्येने केले ।।

असे अत्यंत समर्पक उद्‌गार महात्मा ज्योतिबा फुले यांनी काढलेले आहेत. अज्ञान हे सगळ्या प्रकारच्या अंधश्रद्धा, देवभोळेपणा, कर्मकांड, कुप्रथांचा व अत्याचारांचं मूळ आहे, त्यामुळे ज्ञान हे सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक व राजकीय जीवनामध्ये जगताना खूप महत्त्वाचा मानले जाते. हे जगभरातील सामाजिक व शैक्षणिक समाजसुधारक व विविध सामाजिक चळवळीच्या लोक जागरणांमधून आपल्यापर्यंत पोहोचलेला आहे. शिक्षण हे खऱ्या अर्थाने समाज परिवर्तनाचे, व्यक्तिमत्त्व विकासाचे प्रभावी हत्यार आहे. ज्ञानाशिवाय व्यक्ती आंधळी आहे. शिक्षण म्हणजे सामाजिक प्रगती, शिक्षण म्हणजे सर्वांगीण विकास होय. प्राचीन ग्रीक राजकीय विचारवंत प्लेटो शिक्षणाबद्दल म्हणतो की, Education is the capacity to feel pleasure and pain at the right moment. तसेच शिक्षणाचा उद्देश न्याय आणि सद्‌गुणी मानवी वर्तन प्राप्त करणे आहे. प्लेटोनी असेही म्हटले आहे की, अंगभूत प्रतिभा शोधण्यात आणि विकसित करण्यात,

शिकणाऱ्याला त्याच्या किंवा तिच्या भविष्यातील जीवनासाठी क्रमाक्रमाने तयार करण्यात शिक्षण महत्त्वपूर्ण भूमिका बजावते. ऑरिस्टॉटलने शिक्षणात नैतिकतेला अधिक महत्त्व दिले (आजच्या शिक्षणात नैतिकता दिसून येते का?). तसेच तथागत गौतम बुद्ध शिक्षणाबद्दल असे म्हणतात की, ''ज्ञान म्हणजेच प्रकाश होय.'' महात्मा फुले आणि सावित्रीबाई फुले यांच्या मते, शिक्षण हा महिला, दलित आणि खालच्या जातीतील लोकांसाठी मुक्तीचा मार्ग आहे. तर डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर म्हणतात की, ''शिक्षण हे वाघिणीचे दूध आहे जो प्राशन करेल तो गुरगुल्या शिवाय राहणार नाही.'' तसेच डॉ. आंबेडकरांनी मांडले की, शिक्षण हे समाजात स्वातंत्र्य आणि समतेची मूल्ये रुजवण्याचे आणि अज्ञान कमी करण्याचे महत्त्वाचे साधन आहे. असे असले तरी आजची वास्तविक परिस्थिती खूप वेगळी आहे.

भारत स्वातंत्र्य झाल्यानंतर लोकशाहीचे मूल्य भारतीयांमध्ये रुजवण्यासाठी शिक्षणासारखं माध्यम शाळा, महाविद्यालय, विद्यापीठे, आणि विविध संशोधन संस्था यांच्या माध्यमातून उपलब्ध करून देण्यात आले. शिक्षण ही समाज निर्मितीसाठी आवश्यक बाब आहे व त्यासाठी सरकारने त्यामध्ये वसलेल्याही नफा-तोट्याची समीकरणे न मांडता केवळ आणि केवळ मानवाच्या सर्वांगीण विकासासाठी दीर्घ काळाची गुंतवणूक करणे गरजेचे आहे. हे आपणास सुरुवातीच्या शिक्षणावरील खर्चावरून दिसून येते. १९९० नंतरच्या उदारीकरणाच्या धोरणामुळे शिक्षण, आरोग्य, सार्वजनिक वाहतूक, रस्ते व शेती याकडे सरकारने जाणीवपूर्वक दुर्लक्ष केले. अधिकाधिक नफ्याच्या दिशेने वेगाने प्रवास करणाऱ्या खाजगी संस्थेने सरकारची भागीदारी स्वतःकडे घेतली. त्यातून शिक्षण व्यवस्थेमध्ये भांडवलदाराची घुसखोरी मोठ्या प्रमाणात होताना दिसून येते. एखाद्या देशाला नेस्तनाबुत करायचे असेल तर बॉम्ब गोळाच लागतो असे नाही, तर त्या-त्या देशाच्या शिक्षण व्यवस्थेला सुरुंग लावला तरी देश हा विघातक दृष्टीने पुढे जायला लागतो.

राजश्री शाहू महाराजांनी १९१७ साली सक्तीच्या प्राथमिक शिक्षणाचा कायदा केला होता आणि सध्याचे शासन मात्र शाळा बंद करीत आहे; हा विरोधाभास स्पष्टपणे दिसून येतो. शाहू महाराज म्हणाले होते, ''शिक्षणच आमचा तरणोपाय आहे, शिक्षणाशिवाय कोणत्याही देशाची उन्नती झाली नाही असे इतिहास सांगतो.'' अज्ञानात बुडून गेलेल्या देशात उत्तम मुत्सद्दी व लढवय्ये कधीही निपजणार नाहीत. म्हणूनच सक्तीच्या आणि मोफत शिक्षणाची हिंदुस्तानला गरज आहे. हंटर कमिशनला दिलेल्या निवेदनातही महात्मा फुले अशाच स्वरूपाची मागणी करतात. ते म्हणाले, ''शिक्षण धंदेवाईक असो अथवा प्राथमिक ते देण्याची सरकारची जबाबदारी असली पाहिजे.'' परंतु आजचे सरकार म्हणते आहे, 'शिक्षण आम्ही देणार नाही, ती आमची जबाबदारी नाही, तुम्ही ते बाजारातून खरेदी करा.' अर्थात मोठ्या प्रमाणात फीस भरून खाजगी संस्थेतून शिक्षण घ्या आणि ह्याच खाजगीकरणाला प्रोत्साहन देणारे विज्ञानाला दुय्यम स्थान देऊन धार्मिक बाबींना अधिक महत्त्व देणारे नवीन शैक्षणिक धोरण आहे.जे.पी नाईकांनी भारतीय शिक्षण पद्धतीचे तीन दोष सांगितले आहेत. अभिजनवाद, श्रेणीबद्ध समाजरचना (जाती प्रथा) व दारिद्र्य (भांडवलशाही)! राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण २०२० हे या प्रश्नाला सामोरे जात आहे असे दिसत नाही! भारतातील गेल्या ४०००

ते ५००० वर्षाचा इतिहास हा शिक्षणाच्या संदर्भात क्रांती व प्रतिक्रांतीचा इतिहास आहे. शुद्रातिशुद्रांसाठी कधी शिक्षण बंदी तर कधी शिक्षण मुक्ती असा हा इतिहास आहे. वैदिक कालखंडात स्त्री शुद्रातिशुद्रांसाठी शिक्षण बंदी होती तर बौद्ध कालखंडात शिक्षण मुक्ती झाली, नंतर परत शिक्षण बंदी आली. ब्रिटिश कालखंडात व स्वातंत्र्यानंतर फुले, शाहू, आंबेडकर व भारतीय संविधान यामुळे शिक्षण मुक्ती झाली.

मुख्य शब्द :

शैक्षणिक धोरण, स्कूल कॉम्प्लेक्स, महाविद्यालय, विद्यापीठ,ज्ञान, संशोधन, खाजगीकरण व क्लस्टर इ.

राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण २०२० चे चार टप्पे :

राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण हे मुख्यतः चार टप्प्यांमध्ये विभागलेला आहे. ते ५+३+३+४ अशा प्रकारे. या नवीन पॅटर्नमध्ये १२ वर्षाचे शालेय शिक्षण आणि ३ वर्षाचे पूर्व प्राथमिक शिक्षण समाविष्ट आहे. हे धोरण सरकारी आणि खाजगी दोन्ही संस्थांना पाळावे लागतील.

१) पायाभूत टप्पा : (५ वर्ष)

हा पायाभूत टप्पा ३ ते ८ वयोगटातील मुलांसाठी आहे. ज्यामध्ये ३ वर्षाचे शालेय शिक्षण अर्थात प्री-स्कूल व पहिली व दुसरीचे २ वर्षे समाविष्ट आहे. पायाभूत टप्प्यात भाषा कौशल्य आणि अध्यापनाच्या विकासावर भर दिला जाईल. या टप्प्यात कोणतीही परीक्षा नसेल.

२) पूर्वतयारीचा टप्पा : (३ वर्ष)

वय वर्ष ८ ते ११ वयोगटातील मुले या गटात समाविष्ट आहेत. यामध्ये इयत्ता तिसरी ते पाचवी च्या मुलांचा समावेश होतो. या टप्प्यात प्रामुख्याने मुलांची भाषा आणि संख्यात्मक कौशल्य विकसित करणे हे शिक्षकांचे उद्दिष्ट असेल. या टप्प्यातील मुलांना प्रादेशिक भाषेत शिकवले जाईल. या टप्प्यात परीक्षा घेण्यास मुभा आहे. म्हणजे येथून पुढे परीक्षा घेऊ शकतात.

३) मधला टप्पा : (३ वर्ष)

इयत्ता सहावी ते आठवी पर्यंतची मुले मधल्या टप्प्यात येतील. ६ व्या वर्षापासून मुलांना कोडींग शिकवले जाईल, कॉम्प्युटरचे ज्ञान देण्यात येईल, त्यांना व्यावसायिक चाचण्या तसेच इंटर्नशिप दिली जाईल व व्होकेशनल शिक्षण देण्यात येईल.

४) माध्यमिक टप्पा : (४ वर्ष)

इयत्ता नववी ते बारावी पर्यंतचे मुले माध्यमिक टप्प्यात येतील. पूर्वीच्या मुलांना विज्ञान, वाणिज्य आणि कला या विषयात प्रवेश घेता यायचा मात्र आता ते रद्द करण्यात आले आहे. आता मुले त्यांच्या आवडीचा विषय घेऊ शकतात. उदा. मुले विज्ञानासह वाणिज्य किंवा वाणिज्यासह कला घेऊ शकतात. या टप्प्यातील परीक्षा वार्षिक नसून सहामाही पद्धतीने घेण्यात येणार. तसेच परकीय भाषांचा अभ्यास याच टप्यात करता येईल.

स्कूल कॉम्प्लेक्स :

नवीन शैक्षणिक धोरणांमध्ये घटक क्रमांक ७ मध्ये १ ते १२ उप मुद्द्यात केंद्र सरकारने स्कूल कॉम्प्लेक्स/क्लस्टर ची योजना मांडली आहे. २०२५पर्यंत ही योजना पूर्ण केली जाईल. कोणत्याही ५ ते १० किलोमीटर भौगोलिक परिसरामध्ये हे एक स्कूल कॉम्प्लेक्स निर्माण करण्याचे नियोजन आहे. या कॉम्प्लेक्स मध्ये एक माध्यमिक विद्यालय असेल. U-DISE नुसार देशातील प्राथमिक स्तरावरील ३० पटाखालील एकूण २८ टक्के शाळा, उच्च प्राथमिक स्तरावर १४ टक्के शाळा बंद करण्यासाठी वातावरण तयार केले जाईल व त्या परिसरातील १० किलोमीटरच्या आत एकच स्कूल कॉम्प्लेक्स सुरू होईल. त्याचे व्यवस्थापन स्थानिक स्तरावर खाजगीकरण करून व्यवस्थापन समितीच्या हातात सोपवले जाईल. यामध्ये विविध भौतिक सुविधा स्कूल कॉम्प्लेक्स मध्ये दिल्या जातील अशी आश्वासन आहे. याचे विपरीत परिणाम गावा-गावातील, डोंगराळ भागातील, दऱ्या-खोऱ्यातील तांडे, वाड्या व वस्त्यांवर होईल. छोट्या शाळांबद्दल या धोरणात नकारात्मक दृष्टिकोन तयार केला आहे. यामुळे शालेय शिक्षणाचे पूर्ण खाजगीकरण होऊन गोर-गरिबांच्या मुलांचे शिक्षणावर विपरीत परिणाम होईल. शालेय शिक्षण ही योजना विकेंद्रीकरणांमुळे अधिक प्रभावी होती परंतु या नवीन शैक्षणिक धोरणामुळे ही वाटचाल उलट दिशेने विकेंद्रीकरणांकडून केंद्रीकरणाकडे होईल असं अभ्यासक सांगताना दिसते.

उच्च शिक्षणातील बदल :

महाविद्यालयीन शिक्षणात कला, वाणिज्य आणि विज्ञान अशा ३ शाखा प्रवेश प्रक्रियेत (होत्या) आहेत. पण नवीन मसुद्यानुसार कला आणि विज्ञान शाखांमधले काही विषय निवडून विद्यार्थ्यांना पदवीचे शिक्षण घेता येणार आहे. यामध्ये मानवी शिक्षण, विज्ञान, कला, स्पोर्ट्स, व्होकेशनल कोर्स असे पर्याय असतील. ज्या विद्यार्थ्यांना अनेक विषयामध्ये रस/आवड आहे त्यांच्यासाठी हा पर्याय देण्यात आलेला आहे. उदा. महाविद्यालयात शिकत असताना इंजीनियरिंगच्या विद्यार्थ्यांना संगीत शिकता येईल. तसेच पदवीचे शिक्षण ४ वर्षे घेता येतील. यामध्ये अभ्यासक्रम मधल्या टप्प्यात सोडून देण्याची मुभा देण्यात आली आहे. (अगोदरच पदवीपर्यंतच्या शिक्षणात मोठ्या प्रमाणात गळतीचे प्रमाण असताना देखील असा निर्णय

नवीन शैक्षणिक धोरणात घेणे कितपत योग्य आहे? अर्थात गळतील आता कायदेशीर मान्यता असेल!) पदवीच्या प्रथम वर्षात शिक्षण सोडल्यास प्रमाणपत्र दिले जाणार, दुसऱ्या वर्षी शिक्षण सोडल्यास डिप्लोमा घोषित करणार, तिसऱ्या वर्षी शिक्षण सोडल्यास पदवी बहाल करणार आणि चौथे वर्ष पूर्ण केल्यास पदवीचे प्रमाणपत्र तसेच संशोधन करण्यास पात्र म्हणून घोषित करणार. शिवाय पदव्युत्तरपदवी घेताना विद्यार्थ्यांना पर्याय उपलब्ध असतील. त्यामध्ये ज्यांनी पदवीचे ४ वर्षे पूर्ण शिक्षण घेतले आहे त्यांना पद्युत्तर पदवी १ वर्षात पूर्ण करता येऊ शकणार, ३ वर्षात ज्यांनी पदवीचे शिक्षण पूर्ण केले आहे, त्यांना २ वर्षाचे पदव्युत्तर पदवीचे शिक्षण घ्यावे लागणार. अर्थात एकूण ५ वर्षांमध्ये पदवी व पदव्युत्तर पदवीचे शिक्षण घेता येणार. (यात फक्त अंशतः बदल आहेत.) शिवाय आता पीएच.डी ५ ऐवजी ४ वर्षात पूर्ण करता येईल. नव्या संरचनेत एम.फिल हा अभ्यासक्रम बंद करण्याची तरतूद करण्यात आली आहे.

नवीन शैक्षणिक धोरण व सद्य स्थिती :

२९ जुलै २०२० रोजी झालेल्या केंद्रीय मंत्रिमंडळाच्या बैठकीत नवीन शैक्षणिक पद्धतीला/धोरणाला मंजुरी देण्यात आली व ३४ वर्षानंतर देशाच्या शिक्षण पद्धतीमध्ये मोठे बदल करण्यात आले आहे. मनुष्यबळ मंत्रालयाकडून के. कस्तुरीरंजन सह१२ सदस्यांच्या नेतृत्वाखालील नवीन शैक्षणिक धोरण मसुदा तयार करण्यात आला होता. हे आत्तापर्यंतचे भारताचे तिसरे शैक्षणिक धोरण असून या आधी १९६८ साली भारतात पहिले शिक्षण धोरण लागू करण्यात आले होते. त्यानंतर १९८६ मध्ये दुसरे आणि १९९२ मध्ये या शैक्षणिक धोरणात बदल करण्यात आले होते. २००९ मध्ये शिक्षण हक्क कायदा आणला गेला होता ज्याची अंमलबजावणी २०१३ पासून करण्यात आली.

युनेस्कोने शिक्षणाचे चार प्रमुख उद्दिष्टे सांगितले आहेत. यामध्ये व्यक्ती आणि समाजाच्या एकत्रित विकास, शिक्षणातून जगण्यासाठीची कौशल्ये आत्मसात करता आली पाहिजे, सतत शिकत राहण्याची व ज्ञान आत्मसात करण्याची ऊर्जा शिक्षणाच्या माध्यमातून विकसित होत गेली पाहिजे व शेवटचे म्हणजे सर्व समूहाचा जात, धर्म, प्रांत या अभिनिवेशात न अडकता सहजीवनाची प्रेरणा विकसित होणे. या चार उद्दिष्टाची पूर्तता ज्या शैक्षणिक धोरणाच्या/नीतीची माध्यमातून होते. त्यातून व्यक्ती सर्वांगीणदृष्ट्या परिपूर्ण नागरिक म्हणून ज्ञानसंपन्न होते.त्या शिक्षणाला आपण परिपूर्ण शिक्षण असे म्हणतो. या चार उद्दिष्टाची पूर्तता नवीन शैक्षणिक धोरणाच्या माध्यमातून होते? हा खऱ्या अर्थाने गंभीर आणि कळीचा प्रश्न आहे. के. कस्तुरीरंजन यांच्या अध्यक्षतेखाली नवीन शैक्षणिक धोरणातील पाचवीपर्यंतचे मातृभाषेतून शिक्षण, ३ ते १८ वयोगटाचा शिक्षण हक्क कायद्याअंतर्गत करण्यात आलेला समावेश, शिक्षणावर सकल राष्ट्रांतर्गत उत्पन्नाच्या ६ टक्के खर्चाची भूमिका, या खऱ्या अर्थाने नवीन शैक्षणिक धोरणातील जमेच्या बाजू म्हणाव्या लागतील. मुळात पाचवी पर्यंतचे शिक्षण मातृभाषेतून देण्यात येईल, असे या शैक्षणिक धोरणात म्हटले आहे, असे सर्वत्र म्हटले जात आहे. परंतु नवीन शैक्षणिक धोरणातील मूळ प्रस्तावात वेगळेच काहीतरी म्हटले आहे.

ते म्हणजे 'जेथे शक्य असेल तेथे मातृभाषेतून शिक्षण दिले जाईल'. ही झाली एक बाजू. दुसरी बाजू अशी की, यापूर्वी १९६४-६६ साली कोठारी आयोगाने याविषयीची स्पष्ट मांडणी केलेली असून त्यामध्ये म्हटले आहे की, त्रि-भाषा सूत्राची अंमलबजावणी करून मातृभाषा, राष्ट्रभाषा आणि संपर्क भाषा (इंग्रजी) या भाषा मुलांना शिकवण्यात याव्यात.

'टाइम्स हायर एज्युकेशन वर्ल्ड युनिव्हर्सिटी रँकिंग'नुसार जगातल्या सर्वोत्कृष्ट ३०० विद्यापीठांमध्ये भारतातील एकही विद्यापीठ नाही. पहिल्या पाचशे विद्यापीठांमध्ये भारतातील एकूण १,३०० विद्यापीठांपैकी केवळ सहा विद्यापीठे आहेत. 'ईएफए ग्लोबल मॉनिटरिंग रिपोर्ट– २०१०'नुसार शैक्षणिक विकासाच्या बाबतीत १२८ देशांमध्ये भारताचा क्रमांक १०५ वा होता. संयुक्त राष्ट्रसंघाच्या अहवालानुसार, जगातील सर्वाधिक निरक्षर (एकूण निरक्षरांच्या तब्बल ३७ टक्के) हे भारतात (२८.७ कोटी) आहेत. २०११ च्या जनगणनेनुसार५-१७ वयोगटातील तब्बल ८.४ कोटी बालके ही शाळाबाह्य आहेत. उच्च शिक्षणात पुरता गोंधळ असताना गुणवत्तेचे ढोल विविध महाविद्यालय आणि विद्यापीठे स्वत:च राजरोस आहेत, परंतु आंतरराष्ट्रीय पातळीवर भारताची छबी विशेष अशी चांगली नाही. जगातील सर्वाधिक उद्धृत केल्या जाणाऱ्या ४,००० संशोधकांमध्ये (Global Highly Cited Researchers 2018) केवळ १० भारतीय आहेत. शालेय प्रगती किती गुणात्मक आहे हे तर बोलायलाच नको.

स्किल इंडिया या नावाने २०१५-१६ आणि २०१७-१८ या वर्षांचे स्वतंत्र अहवाल आले आहेत. यामध्ये नमूद केल्याप्रमाणे कुशल मनुष्यबळाचे बाबतीत इतर अनेक राष्ट्रांची तुलना केली तर आपण कुठे आहोत? याविषयीचा काही एक अंदाज येऊ शकतो. औपचारिक कौशल्य शिक्षण प्राप्त मनुष्यबळाचे शेकडा प्रमाण अमेरिकेत ५२ टक्के, ब्रिटन ५८, जर्मनी ७५, जपान ८० टक्के आणि चीनमध्ये २४ टक्के आहे, तर भारतात फक्त २.२ टक्के आहे. या अतिशय महत्त्वपूर्ण घटकाचा विचार करून काही ठळक/ठोस तरतुदी नवीन शैक्षणिक धोरणात करण्यात आलेल्या आहेत काय? की, फक्त शब्दांची चलाखी पाहायला मिळते. यावर जिज्ञासूंनी लक्ष देणे गरजेचे आहे. या नवीन शैक्षणिक धोरणात स्वागत करण्यासारखी गोष्ट म्हणजे कौशल्य आधारित प्रशिक्षणावर दिलेला भर. तसेच या शिक्षण मंत्रालयाचे नामकरण राजीव गांधी यांनी मानव संशोधन विकास मंत्रालय असे केले होते. सद्याच्या सरकारच्या मातृसंस्थेची अशी धारणा आहे की, मानवास संसाधन कसे म्हणता येईल. म्हणून पुन्हा शिक्षण मंत्रालय असा प्रवास सुरू झाला असावा?.

नवीन शैक्षणिक धोरणात बहुविद्याशाखीय शैक्षणिक संकुल निर्माण केली जातील असे म्हटले आहे. त्यासाठी एक विद्याशाखीय महाविद्यालये (ज्या ठिकाणी ३००० पेक्षा कमी विद्यार्थी प्रवेशीत असतील अशी बहुविद्याशाखीय महाविद्यालये सुद्धा) यामध्ये संकलित केली जातील. या संकुलात विद्यार्थी अभियांत्रिकीपासून कला, वाणिज्य, विज्ञान व्होकेशनल कोर्स (त्यांने इच्छा केली ते.....) चालतील असं म्हटलं आहे. देशातील सर्वांगीण पातळीवरील वास्तवाचे भान बाळगून धोरण आखणी झाली नाही, याचा हा सर्वोत्कृष्ट पुरावा आहे. दुसरे असे की, जागतिक पातळीवर शिक्षक विद्यार्थी प्रमाणाशी आपले प्रमाण

दूरवर मेळ खात नाही. अमेरिका, चिन आणि क्युबा या राष्ट्रांतील हे प्रमाण (साधारणपणे १६ ते २० विद्यार्थी एक शिक्षक) आणि आपले (४६ विद्यार्थी एक शिक्षक) अगदी दुपटीपेक्षाही अधिक (यामधील पूर्णवेळ, अर्धवेळ, कंत्राटी तासिका तत्त्वावरील या सर्वांचा अंतर्भाव) आहे.

A Policy Framework For Reforms In Education असा कुमारमंगलम बिर्ला-अंबानी यांचा अहवाल २० एप्रिल २००० मध्ये तत्कालीन पंतप्रधान मा. अटलबिहारी वाजपेयी यांच्याकडे सुपूर्द करण्यात आला होता. त्या अहवालात ज्या शिफारसी करण्यात आल्या होत्या, त्या म्हणजे भारतीय शिक्षण व्यवस्था बाजारभिमुख नसून थास बाजारप्रणित बनवले पाहिजे. विद्यापीठे महाविद्यालयांना देण्यात येणाऱ्या अनुदानात कपात करण्यात यावी. या विद्यापीठांना व महाविद्यालयांना आर्थिक दृष्ट्या स्वावलंबी होण्यास भाग पाडावे, अशा प्रकारच्या तरतुदी करण्यात आलेल्या होत्या. या अहवालांचा आधार घेत, जानेवारी २००१ मध्ये भारतीय विज्ञान काँग्रेसमध्ये दिलेल्या भाषणात तत्कालीन पंतप्रधान वाजपेयी यांनी उच्च शिक्षणावरील वाढत्या खर्चाविषयी चिंता व्यक्त केली. त्यांच्या भाषणाचा सूर हा शिक्षणाचे बाजारीकरण करणे किती आवश्यक आहे, याकडे अधिक होता. हा संदर्भ याचसाठी की, नुकतेच जाहीर झालेले नवीन शैक्षणिक धोरण या बिर्ला-अंबानी अहवालावरच आधारित असल्याचे व त्यांचे प्रतिबिंब महाविद्यालयांना दिली जात असलेली मान्यता २०३० पर्यंत हळूहळू बंद करण्यात येईल. म्हणजे असे की, सर्व उच्च शिक्षण संस्था स्वायत्त व स्वयंशासित संस्था असतील आणि संलग्नीकरण पद्धत बंद करण्यात येईल. मान्यताप्राप्त महाविद्यालयांना 'स्वायत्ता'पदवी प्रदान करणारी महाविद्यालय या अर्थी विकसित करण्यासाठी आवश्यक सहाय्य केले जाईल.

राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरणाच्या (२०२०) अनेक प्रमुख मुद्द्यांपैकी एक मुद्दा आहे - २०३५ पर्यंत संलग्नीकरण व्यवस्था मोडीत काढणं. त्याप्रमाणे महाविद्यालयांनी स्वतःला स्वायत्त बहुविद्याशाखीय उच्च शैक्षणिक संस्थांमध्ये परिवर्तित करावे, स्वतःला अद्यावत करावे, असे करून त्यांनी पदवी प्रदान करण्यास स्वतःला सक्षम करावे. ते करण्यासाठी समजा त्यांना त्यांचे स्वतःचे स्रोत आणि परिस्थिती मुभा देत नसेल तर त्यांनी एकात्मक किंवा विलीन व्हावं किंवा बळकटीकरण करावे किंवा समूहाचा (क्लस्टरचा) भाग व्हावे. जर ते यापैकी काही करण्यास सक्षम नसतील तर त्यांच्यावर बंदीची वेळ येईल. एका बाजूस अशा स्वरूपाचे वास्तव अधोरेखित होत असताना सरकार शिक्षणाच्या खाजगीकरणाकडे मोठ्या प्रमाणात झुकत आहे. भारतीय शिक्षण व्यवस्थेचा प्रवास हा खूप रोमांचक आहे. ते असे दान-अनुदान-विनाअनुदान-कायम विनाअनुदान असा झाला असून, शिक्षणाकडे एक उद्योग म्हणून बघितले जात आहे. विशेषतः हा शैक्षणिक धोरण मंजूर होत असताना किंवा लागू करताना/घोषणा करताना देशाच्या संसदेमध्ये त्याची चर्चाही होऊ नये, हे खऱ्या अर्थाने दुर्दैवी आहे. ते आजच्या संसदीय लोकशाहीस मारक आहे असे प्रमाणिकपणे वाटते या विषयावर संसदेत चर्चा न झाल्यामुळे असे वाटू लागले आहे की, सर्वसामान्यांना न परवडणारे शिक्षण घाई-गडबडीत आणून मध्यमवर्गीयांच्या शिक्षणावर घाला घालण्याचा प्रयत्न म्हणावा लागेल. अर्थात पूर्वी

'प्रस्थापित' समाजव्यवस्थेने शिक्षण नाकारले आणि आता 'आर्थिक मागासलेपणा' मुळे शिक्षण नाकारले जाणार आहे ही वास्तव परिस्थिती नाकारता येत नाही.

राष्ट्रीय शिक्षण धोरण २०२० चे अंमलबजावणी राष्ट्रीय आणि राज्यपातळीवर सुरू झाली आहे. 'सार्थक', 'निपुण' व इतर काही मार्गदर्शन दस्तऐवज केंद्र सरकारच्या शिक्षण विभागाने प्रकाशित केले आहेत. केंद्र सरकार आणि भाजप प्रणीत राज्य सरकार हे धोरण प्रभावी रित्या राबविण्यासाठी मोठ्या उत्साहाने कामाला लागले आहेत. विद्यापीठ अनुदान आयोगाने (युजीसी) भारतीय ज्ञानरचनेवर आधारित अभ्यासक्रम आराखडा नुकताच जाहीर केला आहे.

उच्च शिक्षण संस्थांची संख्या :

विद्यापीठे :	महाविद्यालये
केंद्रीय विद्यापीठे -४३	महाविद्यालये- ३९०७१
राज्य सार्वजनिक विद्यापीठे -३२९	
अभिमत विद्यापीठे - १२२	
राज्य खाजगी विद्यापीठ -१९७	
केंद्रीय मुक्त विद्यापीठ -१	
राज्य मुक्त विद्यापीठ -१३	
राष्ट्रीयदृष्ट्या महत्त्वपूर्ण संस्था -७५	
राज्य खाजगी विद्यापीठ -१	
राज्याधीन संस्था -५	
इतर -१३	
एकूण - ७९९	

Source : Government of India, Educational all Stastic, Ministory of Human Resources Development, New Delhi - 2018

नवीन शैक्षणिक धोरणाचे फायदे :

१) एकूण GDP च्या ६% रक्कम शैक्षणिक विकासावर खर्च करण्यात येणार.

२) शाळा, महाविद्यालयाचे वर्गीकरण करून फिज् ठरवण्यात येणार.

३) मुलांना प्रात्यक्षिक (व्हॅकेशनल) शिक्षण देण्यात येईल.

४) निकालांमध्ये बदल :

(अ) विद्यार्थी स्वतःचे मूल्यमापन करणार.

(ब) स्वतःचा आत्मविश्वास.

(क) वर्गातील सहकारी मित्र एकमेकांना गुण देणार.

(ड) शिक्षक विद्यार्थी वर्तवणुकीला गुण देणार.

५) परदेशातील टॉप असणाऱ्या विद्यापीठांना भारतात आमंत्रण (शिकवण्यासाठी)

६) शिक्षकांना ४ वर्षाने प्रशिक्षण देणार.

तोटे :

१) इंग्रजी विषयाला दुय्यम स्थान.

२) केंद्रीकरण पद्धत यामध्ये अभ्यासक्रम केंद्रशासन ठरवणार व ते राज्यांनी स्वीकारावे लागेल.

३) एम.फिल ही पदवी बंद करण्यात आली.

४) डी.एड, बी.एड महाविद्यालय बंद करून इंटीग्रेटेड बी.एड क्रोर्सेस तयार करणार.

५) दहावी व बारावी बोर्डाच्या परीक्षेत महत्त्व कमी होणार.

६) उच्च शिक्षणाबाबत अनास्था.

समारोप :

भारत सरकारने जो नव्याने आणलेला शैक्षणिक धोरण आहे, ते प्रामुख्याने गर्भ-श्रीमंताच्या खिशाला सोसणारा किंवा परवडणारा व गरिबांच्या आवाक्याच्या बाहेरचे आहे. कारण हे धोरण खाजगीकरणास अधिक वाव देतो व सार्वजनिक शाळा, महाविद्यालयांना कशा पद्धतीने गुंडाळता येईल याचाच प्रयत्न या धोरणात दिसून येतो. क्लस्टर, संलग्रीकरण च्या माध्यमातून गरिबांचे शिक्षण हिसकावून घेण्याचा हा प्रयत्न होताना दिसतो. शिवाय हे धोरण विना चर्चा संसदेत मंजूर केले जाते हे भारतीय संसदीय लोकशाहीस कितपत योग्य (घातक) आहे? यावर गांभीर्याने विचार करणे गरजेचे आहे.

-●●●●●-

संदर्भ :

१) फुले, ज्योतीराव, हंटर शिक्षण आयोगाकडे सादर केलेले निवेदन, (संपा.) य. दि. फडके, महात्मा फुले समग्र वाङ्मय, महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळ, मुंबई, १९९१.

२) तेगमपुरे, मारोती, वलसे, राज्यक्रांती, नवीन राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरणात आम्ही भारताचे लोक कुठे?, शब्दवेध बुक हाऊस, औरंगाबाद, २०२२, पृ. क्र. ९, १८, १९, २०, २१, ४७,५२.

३) www.mahamtb.com, नवीन शैक्षणिक धोरण : शिक्षण क्षेत्रात नवी पहाट, ९ जाने २०२१, २१:२६:३९ PM.

४) www.orfonline.org, निरंजन साहू, नवे शैक्षणिक धोरण आणि पाच आव्हाने, ७ डिसें २०२१.

५) राष्ट्रीय शिक्षणधोरण, शिक्षण मंत्रालय, भारत सरकार, २०२०.

६) शृंगारे राम, राज्यस्तरीय शाळा बचाव परिषद (स्मरणिका) 'शिक्षा'!, स्वप्नपूर्ती प्रकाशन, मेहकर, २०२३, पृ. क्र. ३०,३८,४९,७४

७) चव्हाण, बळीराम, नवीन शैक्षणिक धोरण आणि शैक्षणिक गुणवत्तेचा प्रश्न, (संपादकीय) तांदळे, प्रमोद, भारतीय स्वतंत्र्याची ७५ वर्ष, Special Issue No. ११८, २००३, पृ. क्र. १२४,१२६,१२८

ISBN -23-24
Book depm.

India's Journey Towards Superpower

Editor in Chief
Dr. Rajesh G. Umbarkar

Scanned with OKEN Scanner

Nanded.(MAH) 431601
ISBN No.: 978-81-962287-1-2

Editor
Dr. Rajesh Gangadharrao Umbarkar
Dept. of Economics, Assistant Professor,
Netaji Subhashchandra Bose Arts, Commerce and Science College,
Nanded. 431 601(Maharashtra)
Email- umbarkar.rajesh@yahoo.com
Mob. No.- 9623979067

●

Published By
SIDDHI PUBLISHING HOUSE, SHRINAGAR, NANDED – 431605 (Maharashtra)
Mob. No. 9623979067
Email :shrishprakashan2009@gmail.com

●

Printers
Anupam Printers,
Shrinagar, Nanded.
431605. Mob. No. 7620303116

●

First Edition : 21 March 2024

© **Author** All rights reserved.

●

Type Setting & Cover Designing
Mss. Pallavi L. Shete
Tejas R. Rampurkar

●

Price :Rs. 500/-

Note: The ideas/views expressed in this book belongs to the writers exclusively. The Editor, Pubisher & Printer have nothing to do it with them. At the same time it is made clear that if writers violate copyright act. they will

Scanned with OKEN Scanner

be responsible for their own action. Hence it is clerfied from Editors, Publisher and Printers side.

:: Advisory Board ::

Dr. Sudir V. Shivnikar
Principl, N. S. B. College, Nanded.

Dr. Kalpna Kadam
Vci Principl, N. S. B. College, Nanded.

Mr. K. J. Kamble
Head Dept. of Economics, Associate Professor
N. S. B. College, Nanded.

Dr. Manish Deshpande
Head Dept. of Physiscs
N. S. B. College, Nanded.

Dr. Girish Pande
Head Dept. of Chemistry, Dyes and Drugs
N. S. B. College, Nanded.

Dr. Aand Ashturkar
Dept. of Enviomental Science, Assistant Professor,
N. S. B. College, Nanded.

Dr. Sandip Kale
Dept. of Englesh, Assistant Professor,
N. S. B. College, Nanded.

Dr. Sagar Sakle
Dept. of Microbylogy, Assistant Professor,
N. S. B. College, Nanded.

Dr. Bhalchandr Dharmapurika
Dept. of Political Science, Assistant Professor,

Scanned with OKEN Scanner

N. S. B. College, Nanded.

:: Editorial Board ::

Dr. CA Varadraj Bapat
Professor, IIT Mumbai.

Mr. Milind Sudhakar Marathe
Chairman, National Book Trust India.
Under Ministry of Education, GoI.

Dr. Vikas Sukale
Head Dept. of Economics, People's College Nanded.
Associate Dean of Faculties of Huminites SRTMU Nanded.

Prof. Dr. Ashok Tiparse
Member Senate and Grievance redressal committee,
Member of Management Council SRTMU Nanded.

Prof. Dr. Namdeo Mundhe
Head of the Dept. of Economics,
shri. Sant Gadge Maharaj Mahavidyalaya, Loha, Dist. Nanded.
Academic Council Member SRTMU (Nominated by Gov. of MS)

Prof. Dr. D. D. Choudhari
Head of the Dept. of Economics, Mahatma Phule Art's Colleghe
Ahmadpur.

Prof. Dr. Ratnakar R. Kamble
Head of the Dept. of Economics, Sharada Mahavidyalaya, Pardhani.

Scanned with OKEN Scanner

Impact Of Exercise On Psychological Health

Dr. Umesh R. Sadegaonkar
Director Physical Education & sports
Shri. Siddheshwar Mahavidyalaya, Majalgaon, Dist. Beed.

Abstract

Mental issues are normal, and they are a critical supporter of inability locally. There is developing interest in the adequacy of activity intercessions for working on mental and actual wellbeing in people with mental problems. This paper audits the proof for the advantages of activity for emotional wellness issues and furthermore shown that actual wellness evidently safeguards the memory places of the mind. Ordinary actual exercise assists bring down our danger for high blood with constraining, elevated cholesterol, diabetes, and host of different issues. In this paper, we are plate the impact of actual wellness as an element affected by sport and other substantial exercises on the psychological well-being of non-patients.

Key words: Physical Fitness, Mental Health, Sports, Exercise.

Introduction

There is a huge gathering of evidence that shows a decent association between real work and mental prosperity and ailment. Individuals who are busy with sports practices have a prevalent tendency about their self-discernment and real prosperity. Cross-sectional assessments show that typical genuine work is connected with better mental wellbeing and enthusiastic flourishing and lower speeds of mental issues.

Genuine wellbeing rehearses help with reestablishing caution, lessen anguish incidental effects, increase excited responses in deterred people, decrease pressure, fix

Scanned with OKEN Scanner

Health:

Emotions:

A we start with normal exercise of any actual work then it becoms our propensity with customary practicing any sort of active work. It serves to achive great expectation for everyday comforts and beneficial routines. Standard practicing fill our existence with uplifting perspective and fortifies our enthusiastic attitude.

Actual exercise are connected with nonstop certain passionate condition of a singular's psyche . Research work completed in this field demonstrated that actual work and emotional well-being are firmly connected with one another. 'META' discribes that oxygen consuming activity gives lift to the psychological and actual energy level. Which expected to perform day today work. In our every day schedule at some point we come accross escalated exhaustion, somewhat or complete disappointment, nervousness, dipression and so on Throu practicing customary active work we can bring down the power of such eliments. Test advances possitive impact of medium power level exercise in keeping up with great emotional wellness.

Fruitfulness:

Active work is firmly connected with by and large physical, mental, profound, wellbeing and our personal satisfaction rely on this viewpoints. There are absolute 8 parts on which personal satisfaction is chararactarized. Imperativeness, Social work, psychological well-being, enthusiastic wellbeing torment, actual work, wellbeing impediments. Research has demonstrated that actual work is benifitted for individuals experiencing mental confusion High-level active work helps adoloscents to adjust their emotional well-being connected state emphatically.

Self Observation:

According to specialists self appraisal is the best file of a

Scanned with OKEN Scanner

person's emotional wellness. It has been demonstrated from non clinical tests, possitive effect of ordinary exercise should be visible as mental self view, self idea can be decidedly improved and level of uneasiness (gloom) can be redused. Concentrate on shows that standard exercise is benificial for mindfulness and mental self portrait. Additionally to change negative mental self view in to possitive. And furthermore it has been demonstrated that significantly quicker clusture of oxygen consuming activity and obstruction preparing strategy assists with working on mental self view.It is been considered in administrative preparation program carried out/executed for large young people, they tracked down their improvement in their mental self portrait and furthermore approach of others towards them was decidedly moved along.

Sleep:

Research shows that out of grown-up populace 30% individuals are experiencing rest issue. Furthermore observed that practicing actual wellness action done in sufficient presence of light it helps in sound rest. Additionally in private review it is been seen that through practice quality and profundity of rest is improved. Along these lines individuals who are experiencing resting jumble by practicing any actual work consistently they can work on their nature of rest.

Stress:

Concentrate on shows that standard active work can limit or control the nervousness level of pressure or strain. To keep away from/diminish mental or actual pressure individuals for the most part tracked down smoking or drinking yet it will not help. In addition, its awful response can be noticed. Practice is the main solid approach to defeating any kind of stress and uneasiness. By practicing customary actual work, we will actually want to keep up with our wellbeing sound and can work on certain reaction to mental pressure and control it.

Sadness:

Scanned with OKEN Scanner

Clinical field has demonstrated that psychological test and stress are the two gentle degrees of mental problems and through practice, one can defeat from it. Research shows that activity is an ideal method of mental pressure recuperating. Thusly active work is a n simpler method for fending off trouble rather than smoking, Alcohol utilization, taking clinical or potentially any mental treatment. Likewise, concentrate on shows that individuals who are effectively doing Physical movement from last at least two years are truly and intellectually fit.

Importance of Physical Exercise to Maintain the Mental Fitness.

Different exploration being done with respect to restoring different genuine physical or mental issue, least three time each week 30 minutes exercise is proposed by the clinical Practitioners. 'Portion' study proposes that 30 Minutes Exercise for at least 5 days in seven days, it helps in bringing down the franticness/mental pressure. High-impact and anaerobic actual preparation advantageous for by and large wellbeing.

Conclusion:

In this paper, connection between actual work and emotional wellness is considered. It is additionally seen that Physiology and Psychology this two unique subjects are firmly related with one another. Additionally for restoring emotional wellness active work are being proposed. In addition, significant level actual wellness empowers a person to improve and additionally keep up with his/her emotional well-being and to seek after a decent way of life. Actual wellness can be improved by customary wearing and other actual moderate exercises. When actual wellness, as an element impacted by sport, is improved, society's emotional well-being can be anticipated to be achieved. Since sport, as an instrument in overseeing pressure, can lessen the impacts of strained quality, increment positive feelings and since it can upgrade

Scanned with OKEN Scanner

individuals' physical and emotional wellness and, subsequently, their joy throughout everyday life. As mental issues increment the danger of persistent states of being, and will quite often repeat across the life expectancy, exercise can be valuable for both mental and actual wellbeing, and may keep up with prosperity and forestall repeats of poor emotional well-being

Reference:

1. K. Pattabhi Jois. (2009). Retrieved January 4, 2012, from K. Pattabhi Jois Ashtanga Yoga Institute:
2. Larkey, L., Jahnke, R., Etnier, J., & Gonzalez, J. (2009). Meditative movement as a category of exercise: Implications for research. Journal of Physical Activity and Health , 6, 230-238.
3. Ross, A., & Thomas, S. (2010). The Health Benefits of Yoga and Exercise: A Review of Comparison Studies. The Journal of Alternative and Complementary Medicine , 16 (1), 3–12.
4. Stack, K. (2011, February 8). Yoga in the NBA: Teams add to their strength and conditioning programs. Retrieved January 14, 2012, from SLAM Online
5. Asci, F.H., The effects of physical fitness training on trait anxiety and physical self-concept of female university students.
6. Psychology of sport and Exercise, 2003(4): p. 255-264.
7. Schmitz, N., J. Kruse, and J. Kugler, The association between physical exercises and health-related quality of life in subjects with mental disorders: results from a cross-sectional survey. Prev Med, 2004. 39(6): p. 1200-7.
8. Mutrie, N., Biddle S.J.H. Fox K,R. The relationship between physical activity and clinically defined depression. In physical activity and psychological well-being. 2000, London: Routledge.
9. Galper DI. Inverse association between physical inactivity and mental health in men and women. Med Sci Sports Exerc.2006;38:173-178.
10. Goodwin RD. Association between physical activity and mental disorders among adults in the United States. Prev Med. 2003;36:698-703.
11. Ellis, N., et al., Exercise interventions as an adjunct therapy for psychosis: a critical review. Br J Clin Psychol, 2007. 46(Pt 1): p. 95-111.
12. Gillison, F.B., et al., The effects of exercise interventions on quality of life in clinical and healthy populations; a meta-analysis. Soc Sci Med, 2009. 68(9): p. 1700-10.

***

Scanned with OKEN Scanner

Swami Ramanand Teerth Marathwada University, Nanded.

And

Abhinav Bharat Shikshan Sanstha's

Netaji Subhashchandra Bose

Art's, Commerce And Science College, Nanded. 431601

NAAC Accredited 'B+' Grade Web: www.nsbcn.org

Department of Economics

One day Interdisciplinary National Level Seminar (Online) - 21 March 2024

"India's Journey Towards Superpower"

Certificate

This is to certify that Prof./Dr./Mr./Ms/ Dr. Umesh R. Sadegaonkar

Of Shri Siddheshwar Mahavidyalaya, Majalgaon

has participated in the One Day Interdisciplinary National Seminar (Online) held on 21th March 2024 as a ~~Key Note Address~~/~~Chair Person~~/~~Resource Person~~ / Participant / Research Student.

He / She has presented & published the research paper on Impact Of Exercise on Psychological Health.

Siddhi Publication House (Chapter in Book) ISBN No. 978-81-962287-1-2

Dr. Rajesh G. Umbarkar	Mr. K.J. Kamble	Dr. Mrs. K. M. Kadam	Dr. S.V. Shivnikar
Dept. of Economics	Head Dept. of Economics	Vice Principal	Principal

BC 23-24

SSGP

Contemporary Research

Editor : Haresh M Raney

© Copyright, 2023 Team Dynamic Ideas

All rights reserved. No part of this publication should be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy recording, or any information storage or retrieval system, without permission in writing from the publisher.

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the authors and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publication's Name or Editors. No responsibility or liability is assumed by the publisher or Editors for any injury damage or financial loss sustained to persons or property form the use of the information, personal or otherwise, either directly or indirectly. While every effort has been made to ensure reliability and accuracy of the information within, all liability, negligence or otherwise, form any use, misuses or abuse of the operation of any methods, strategies, instructions or ideas contained in the material herein is the sole responsibility of the reader. Any copyrights not held by publisher are owned by their respective authors. All information is generalized, presented informational purposes only and presented "as is" without warranty or guarantee of any kind.

All trademarks and brands referred to in this book are for illustrative purposes only, are the property of their respective owners and not affiliated with this publication in any way.

ISBN: 978-93-91773-79-3

Price: 399/-

Publishing Year 2023

Published and printed by:

Shree Siddhivinayak Global Publication

Office Address: E-5, Office No.8, Highland Park,
Mumbai 400082, Maharashtra

Email: ssglobalpublication@gmail.com

EDITORIAL & REVIEW TEAM

Dr. Haresh M Raney

B. Com, M. Com, PGDFM, PGDEM, G.D.C & A, MBA(Finanacc), CCC,UGC NET, PhD

Assistant Prof R S College
Visiting Faculty at OIM College, NES College, Chair Person for SAPM University of Mumbai

Editor in Chief

Mr. Khushraj Singh Sandhu

BAF, Diploma in Accounting, MBA(Finance), M.Com, CCC, Data Analyst, G.D.C&A

Assistant Prof R S College
Entrepreneur SSCI ,SSGP

Editor , Review Team & Technical Expert

Mr. Amol Chitare
BBI, M.Com, M.A,G.D.C & A, CCC, B.Ed,

Assistant Prof R S College
Entrepreneur SSGP

Editor & Review Team

Mr. Pradeep Prasad
B.Com, M.Com, B.Ed,

Assistant Prof R S College
Entrepreneur SSGP

Editor & Review Team

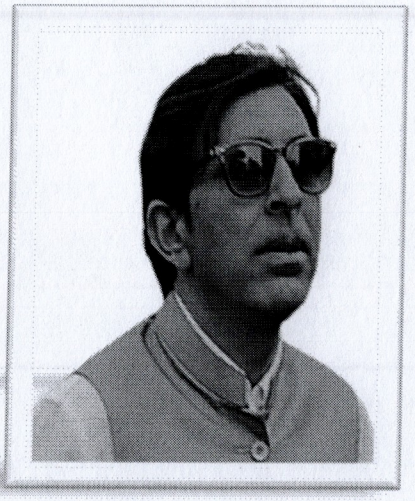

Dr. Afzal Mukhtar

Editor & Review Team

EDITOR'S DESK

It is dream come true and exciting to finally be publishing the Contemporary Research The book has been goal of team dynamic ideas. This issue contains contented from various disciplines and covers innovative and dynamic research work of doctors, professors, professionals, teachers, research scholars and students.

The Book Contemporary Research is possible only due to hard work of team dynamic ideas. We are very thankful to Editors who constantly guided us to achieve this goal. Also, the review team of ***Amol Chitare & Pradeep Prasad*** *and expertise service from Software & Technical Sir* ***Khushraj Singh Sandhu*** *made endless efforts to make this huge success. The editorial and review team constantly made efforts which resulted in works of excellent quality. The Book is Peer reviewed*

Lastly, thanks to each and every member who connected with us in this virtual world and has contributed to "Contemporary Research" making it huge success. This book is dedicated to and belongs to each and every member who has contributed to its success.

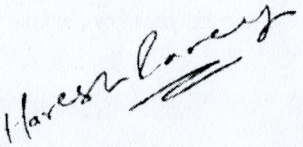

Dr. Haresh Mukesh Raney

INDEX

1. YOUNG GENERATION: WITH PRELOADED DEMOTIVATION 1

2. A HOLISTIC APPROACH OF AYURVEDIC MANAGEMENT OF SHWITRA W.S.R. TO LEUCODERMA (VITILIGO) 10

3. NONLINEAR OPTICAL PROPERTIES OF ACETONITRILE: A COMPREHENSIVE ANALYSIS 18

4. A STUDY ON KNOWLEDGE ASSESSMENT OF SDG 1&2 AMONG UG STUDENTS OF HYDERABAD. 23

5. ECONOMIC SIGNIFICANCE OF TOURISM IN JAMMU AND KASHMIR ECONOMY 33

6. A STUDY ON THE CONNECTION BETWEEN GST AND THE UNORGANIZED HOTELS IN KONKAN REGION OF MAHARASHTRA STATE 42

7. A STUDY ON THE FACTORS RESPONSIBLE FOR THE STUDENTS INTEREST TOWARDS JOINING COACHING CLASSES WITH REFERENCE TO MAHARASHTRA (THANE REGION) 49

8. STUDY ON IMPACT OF NEW TAX REGIME ON MIDDLE CLASS INCOME GROUP 58

9. विभिन्न ग्रंथो मे उद्धृत रागांगो की प्रासंगिकता 63

10. हैद्राबाद मुक्तिसंग्रामात वंदेमातरम् विद्यार्थी चळवळीचे महत्व 67

11. योग साधना के विकास मे अष्टांग योग की भूमिका 74

NONLINEAR OPTICAL PROPERTIES OF ACETONITRILE: A COMPREHENSIVE ANALYSIS

Vinayak P. Deshmukh
Dept. of Physics,
Shri Siddheshwar Mahavidyalaya, Majalgaon
Dist. Beed (MS)- 431131

Abstract

Nonlinear optical (NLO) properties play a pivotal role in the field of optics, enabling the manipulation and control of light-matter interactions. Acetonitrile (CH_3CN), a simple organic compound, has garnered attention for its intriguing nonlinear optical behavior. In this comprehensive exploration, we delve into the various aspects of acetonitrile's nonlinear optical properties, including its molecular structure, electronic characteristics, and the mechanisms underlying its nonlinear response.

Keywords*: Nonlinear optical (NLO) properties, acetonitrile, electronic structure, molecular structure*

Introduction

Acetonitrile, a polar solvent with a chemical formula CH_3CN, has emerged as a subject of interest in the realm of nonlinear optics. Nonlinear optical materials are crucial for applications such as frequency conversion, optical signal processing, and laser technology. Acetonitrile's unique molecular structure, comprising a methyl group and a cyano group, contributes to its intriguing nonlinear optical properties.

Acetonitrile, with the chemical formula CH_3CN, is a simple organic compound belonging to the nitrile family. Its molecular structure consists of a methyl group (CH_3) attached to a cyano group (CN), and it is a polar solvent commonly used in various chemical processes. The study of acetonitrile's theoretical aspects involves understanding its electronic structure, molecular geometry, and the distribution of electron density within the molecule.

Understanding the nonlinear optical behavior of acetonitrile begins with a detailed analysis of its molecular structure. The asymmetric arrangement of the methyl and cyano groups imparts asymmetry to the molecule, influencing its nonlinear response. The presence of polar bonds and the molecular dipole moment contribute to the overall nonlinear susceptibility.

Symmetry plays a crucial role in determining the nonlinear optical properties of a molecule. Acetonitrile lacks a center of inversion symmetry due to its asymmetric structure, making it inherently capable of exhibiting non-zero second-order nonlinear optical effects, such as second harmonic generation (SHG) and sum-frequency generation (SFG).

Theoretical Framework

Quantum Mechanical Methods

Quantum chemistry provides the theoretical foundation for understanding acetonitrile's electronic structure and predicting its nonlinear optical properties. Density Functional Theory (DFT) calculations, coupled-cluster methods, and other advanced quantum mechanical approaches are employed to determine the molecular orbitals, electronic transitions, and hyperpolarizability tensors.

Hyperpolarizability

The hyperpolarizability tensor (βijk) quantifies a molecule's response to an external electric field and is a key parameter in nonlinear optics. For acetonitrile, the hyperpolarizability tensor components reveal insights into its second-order nonlinear optical properties. Theoretical calculations, often involving sophisticated quantum mechanical methods, provide numerical values for these components, aiding in the interpretation of acetonitrile's nonlinear response.

Nonlinear Optical Processes

Second Harmonic Generation (SHG)

Acetonitrile exhibits second-order nonlinear optical effects, with SHG being a prominent manifestation. SHG involves the generation of a second harmonic frequency (twice the input frequency) when a material is subjected to an intense electric field. The non-centrosymmetric structure of acetonitrile facilitates non-zero SHG coefficients, making it a potential candidate for nonlinear frequency conversion applications.

Third Harmonic Generation (THG) and Higher Order Processes

Higher-order nonlinear optical processes, such as third harmonic generation (THG), are also of interest in acetonitrile. These processes involve the generation of frequencies that are multiples of the incident frequency. The study of higher-order nonlinearities provides a comprehensive understanding of acetonitrile's response to intense light fields and is essential for applications requiring diverse frequency outputs.

Experimental Investigations

Hyper-Rayleigh Scattering

Experimental validation of theoretical predictions is crucial for establishing the accuracy of calculated nonlinear optical properties. Hyper-Rayleigh scattering is a widely used experimental technique for measuring second-order nonlinearities. In this method, scattered light at the second harmonic frequency is detected and analyzed to quantify the nonlinear response of a material. Experiments involving acetonitrile have provided valuable data for comparing with theoretical calculations.

Two-Photon Absorption Spectroscopy

Two-photon absorption spectroscopy is another experimental approach employed to study the nonlinear optical properties of materials. By measuring the absorption of two photons simultaneously, this technique provides insights into higher-order nonlinearities, complementing the information obtained from hyper-Rayleigh scattering experiments.

Environmental Factors and Nonlinear Optical Properties

Temperature and Pressure Effects

The nonlinear optical properties of acetonitrile can be influenced by environmental factors such as temperature and pressure. Variations in these parameters may lead to changes in molecular conformation, affecting the overall nonlinear response. Understanding the impact of temperature and pressure is essential for the practical application of acetonitrile in different environments.

Applications and Future Prospects

Nonlinear Optical Materials

Acetonitrile's nonlinear optical properties hold promise for applications in the development of novel nonlinear optical materials. Materials with high nonlinear susceptibilities are sought after for use in frequency conversion devices, ultrafast lasers, and other advanced optical technologies. Acetonitrile's non-centrosymmetric structure makes it a potential candidate for designing materials with tailored nonlinear responses.

Optical Signal Processing

The manipulation of light for signal processing is a key application of nonlinear optics. Acetonitrile's nonlinear properties can be harnessed to modulate and process optical signals, opening avenues for the development of efficient and compact optical signal processing devices.

Future Directions

Ongoing research in the field of acetonitrile's nonlinear optics aims to uncover additional aspects of its behavior. Exploring the nonlinear optical properties of acetonitrile derivatives and understanding how modifications to its molecular structure influence its nonlinear response is an area of active investigation. Additionally, the integration of acetonitrile into composite materials and hybrid systems could lead to enhanced nonlinear optical performance.

The potential applications of acetonitrile in nonlinear optical materials and signal processing underscore its relevance in advancing optical technology. Ongoing research and future directions in this field will likely uncover new facets of acetonitrile's nonlinear behavior, further expanding its utility in the broader landscape of nonlinear optics. As our understanding deepens, acetonitrile may emerge as a versatile and valuable material for shaping the future of nonlinear optical devices and technologies.

Studying the theoretical aspects and hyperpolarizability of acetonitrile involves delving into the realm of quantum chemistry, molecular physics, and spectroscopy. In this extensive discussion, we'll explore the theoretical framework behind acetonitrile, its molecular structure, electronic properties, and the hyperpolarizability phenomenon. The hyperpolarizability of a molecule is a crucial parameter in the field of nonlinear optics, playing a significant role in understanding and manipulating light-matter interactions.

Quantum Chemistry

Quantum chemistry provides the theoretical foundation for understanding molecular behavior at the quantum level. Schroedinger's equation, a cornerstone of quantum mechanics, is employed to calculate the electronic structure of molecules. In the case of acetonitrile, the quantum mechanical treatment involves solving the electronic Schrödinger equation to obtain the wavefunction and, consequently, the electronic properties of the molecule.

Density Functional Theory (DFT)

Density Functional Theory is a widely used method in quantum chemistry for calculating the electronic structure of molecules. It approximates the many-body quantum problem by focusing on the electron density rather than the wavefunction. The choice of an appropriate functional and basis set is crucial for accurate predictions.

Molecular Dynamics Simulations

Molecular dynamics simulations can complement quantum mechanical calculations by providing insights into the dynamic behavior of molecules. These simulations involve numerically solving classical equations of motion for atoms and molecules, allowing the exploration of acetonitrile's conformational changes and its interactions with the surrounding environment.

Electronic Properties

Electronic Structure

The electronic structure of acetonitrile defines its chemical and physical properties. Understanding the distribution of electrons in different molecular orbitals sheds light on the molecule's reactivity and stability. Quantum chemical calculations, such as Hartree-Fock and post-Hartree-Fock methods, provide valuable information about acetonitrile's electronic structure.

Excited States

Exploring the excited states of acetonitrile is crucial for understanding its behavior under different conditions, including exposure to light. Time-dependent DFT (TD-DFT) calculations can predict the absorption and emission spectra, providing insights into the molecule's electronic transitions.

Hyperpolarizability

Basics of Hyperpolarizability

Hyperpolarizability describes the nonlinear response of a molecule to an external electric field. In the context of acetonitrile, this property is vital for understanding its optical behavior in nonlinear optical processes. The hyperpolarizability tensor comprises components (βijk) that characterize the molecule's second-order nonlinear optical response.

Calculation Methods

Various methods, such as finite-field and response theory, are employed to calculate hyperpolarizability. Advanced quantum chemical techniques, including coupled-cluster and correlated wavefunction methods, can provide accurate predictions for acetonitrile's hyperpolarizability. Additionally, time-dependent approaches like TD-DFT can offer insights into the molecule's response to varying electric fields.

Nonlinear Optical Materials

Understanding acetonitrile's hyperpolarizability has implications for developing nonlinear optical materials. Materials with high hyperpolarizability are sought after for applications in optical signal processing, frequency conversion, and nonlinear imaging.

Experimental Validation

Experimental techniques, such as hyper-Rayleigh scattering and electro-optic methods, can validate theoretical predictions of hyperpolarizability. Comparing experimental results with

theoretical calculations enhances our understanding of acetonitrile's nonlinear optical properties and aids in refining theoretical models.

Further Investigations

Ongoing research may explore the influence of environmental factors, such as temperature and pressure, on acetonitrile's hyperpolarizability. Additionally, studying the hyperpolarizability of acetonitrile derivatives or in complex molecular systems could broaden the scope of applications in nonlinear optics.

Conclusion

In conclusion, the theoretical study and hyperpolarizability of acetonitrile involve a multidisciplinary approach, combining quantum chemistry, molecular physics, and experimental techniques. Theoretical calculations using methods like DFT and molecular dynamics simulations provide insights into acetonitrile's electronic structure and dynamic behavior. Understanding its hyperpolarizability is crucial for applications in nonlinear optics, paving the way for advancements in materials science and optical technology. Ongoing research will continue to unravel the intricacies of acetonitrile's behavior and contribute to the broader field of molecular physics.

References

1) C. Kittel, Introduction to Solid State Physics.
2) R. McWeeny, Coulson's Valence.
3) P. W. Atkins and R. S. Friedman, Molecular Quantum Mechanics.
4) A. Szabo and N. S. Ostlund, Modern Quantum Chemistry.
5) I. N. Levine, Quantum Chemistry.
6) D. A. McQuarrie and J. D. Simon, Physical Chemistry: A Molecular Approach.
7) K. Capelle, A Bird's-Eye View of Density-Functional Theory.
8) R. G. Parr and W. Yang, Density-Functional Theory of Atoms and Molecules.
9) J. A. Armstrong, N. Bloembergen, J. Ducuing, and P. S. Pershan, Interactions between Light Waves in a Nonlinear Dielectric.
10) P. N. Prasad, Introduction to Nonlinear Optical Effects in Molecules and Polymers.
11) R. W. Boyd, Nonlinear Optics.
12) M. G. Kuzyk, Organic Molecular Nonlinear Optics: Theory, Experiment and Computation.
13) D. S. Chemla and J. Zyss, Nonlinear Optical Properties of Organic Molecules and Crystals.
14) P. Kinsler, Laser Physics.
15) G. R. Meredith, A. D. Buckingham, and I. H. Hillier, Raman and Hyper-Raman Scattering.

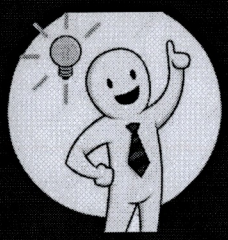

9 789391 773793

23-24
BC

Sterling Research

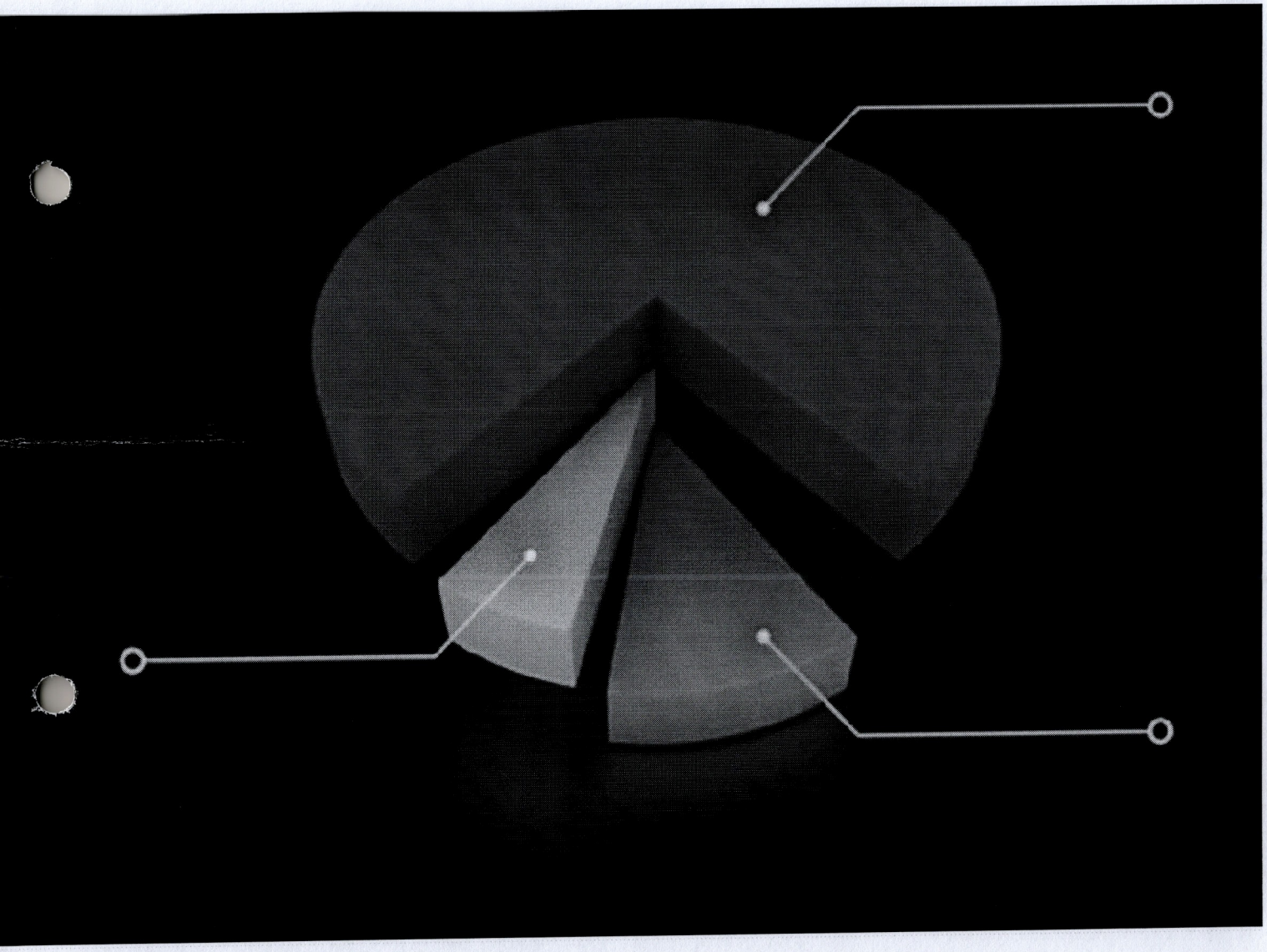

SSGP

© Copyright, 2024 Team Dynamic Ideas

All rights reserved. No part of this publication should be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy recording, or any information storage or retrieval system, without permission in writing from the publisher.

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the authors and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publication's Name or Editors. No responsibility or liability is assumed by the publisher or Editors for any injury damage or financial loss sustained to persons or property form the use of the information, personal or otherwise, either directly or Indirectly. While every effort has been made to ensure reliability and accuracy of the information within, all liability, negligence or otherwise, form any use, misuses or abuse of the operation of any methods, strategies, instructions or ideas contained in the material herein is the sole responsibility of the reader. Any copyrights not held by publisher are owned by their respective authors. All information is generalized, presented informational purposes only and presented "as is" without warranty or guarantee of any kind.

All trademarks and brands referred to in this book are for illustrative purposes only, are the property of their respective owners and not affiliated with this publication in any way.

ISBN: 978-93-91773-72-4

Price: 399/-

Publishing Year 2024

Published and printed by:

Shree Siddhivinayak Global Publication

Office Address: E-5, Office No.8, Highland Park,
Mumbai 400082, Maharashtra

Email: ssglobalpublication@gmail.com

© Copyright, 2024 Team Dynamic Ideas

All rights reserved. No part of this publication should be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy recording, or any information storage or retrieval system, without permission in writing from the publisher.

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the authors and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publication's Name or Editors. No responsibility or liability is assumed by the publisher or Editors for any injury damage or financial loss sustained to persons or property form the use of the information, personal or otherwise, either directly or indirectly. While every effort has been made to ensure reliability and accuracy of the information within, all liability, negligence or otherwise, form any use, misuses or abuse of the operation of any methods, strategies, instructions or ideas contained in the material herein is the sole responsibility of the reader. Any copyrights not held by publisher are owned by their respective authors. All information is generalized, presented informational purposes only and presented "as is" without warranty or guarantee of any kind.

All trademarks and brands referred to in this book are for illustrative purposes only, are the property of their respective owners and not affiliated with this publication in any way.

ISBN: 978-93-91773-72-4

Price: 399/-

Publishing Year 2024

Published and printed by:

Shree Siddhivinayak Global Publication

Office Address: E-5, Office No.8, Highland Park,
Mumbai 400082, Maharashtra

Email: ssglobalpublication@gmail.com

EDITORIAL & REVIEW TEAM

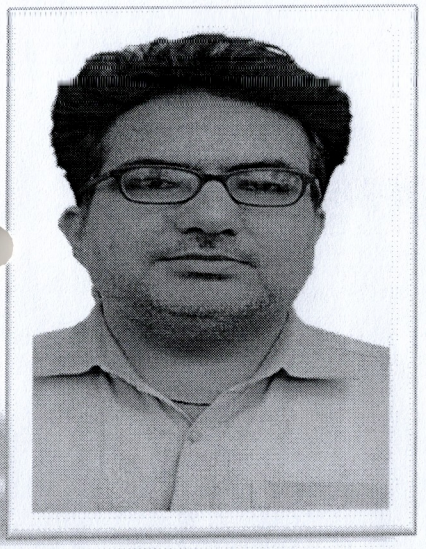

Dr. Haresh M Raney

B. Com, M. Com, PGDFM, PGDEM, G.D.C & A, MBA(Finanace), CCC,UGC- NET, PhD

Assistant Prof R S College
Visiting Faculty at OIM College, NES College, Chair Person for SAPM University of Mumbai

Editor in Chief

Mr. Khushraj Singh Sandhu

BAF, Diploma in Accounting, MBA(Finance), M.Com, CCC, Data Analyst, G.D.C&A

Assistant Prof R S College
Entrepreneur SSCI ,SSGP

Editor , Review Team & Technical Expert

Mr. Amol Chitare
BBI, M.Com, M.A,G.D.C & A, CCC, B.Ed,

Assistant Prof R S College
Entrepreneur SSGP

Editor & Review Team

Mr. Pradeep Prasad
B.Com, M.Com, B.Ed,

Assistant Prof R S College
Entrepreneur SSGP

Editor & Review Team

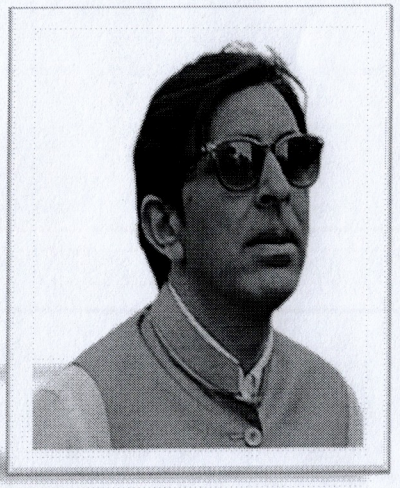

Dr. Afzal Mukhtar

Editor & Review Team

EDITOR'S DESK

It is dream come true and exciting to finally be publishing the Sterling Research The book has been goal of team dynamic ideas. This issue contains contented from various disciplines and covers innovative and dynamic research work of doctors, professors, professionals, teachers, research scholars and students.

The Book Sterling Research is possible only due to hard work of team dynamic ideas. We are very thankful to Editors who constantly guided us to achieve this goal. Also, the review team of ***Amol Chiture & Pradeep Prasad*** *and expertise service from Software & Technical Sir* ***Khushraj Singh Sandhu*** *made endless efforts to make this huge success. The editorial and review team constantly made efforts which resulted in works of excellent quality. The Book is Peer reviewed*

Lastly, thanks to each and every member who connected with us in this virtual world and has contributed to "Sterling Research" making it huge success. This book is dedicated to and belongs to each and every member who has contributed to its success.

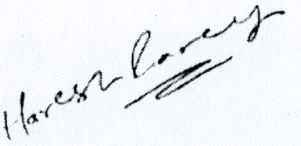

Dr. Haresh Mukesh Raney

INDEX

1. **EXPLORING THE NONLINEAR OPTICAL PROPERTIES OF ORGANIC NANOMATERIALS** 1

2. **STUDY OF THE EFFECT OF FARTLEK TRAINING ON THE PHYSICAL FITNESS OF KABADDI PLAYER** 8

3. **THEORETICAL ASSESSMENT OF THE RIGHTS OF PERSONS WITH DISABILITIES (RPWD) ACT 2016** 13

4. **AN ANALYSIS OF CURRENT SCENARIO AND CONTRIBUTION OF HANDICRAFTS IN J&K ECONOMY** 27

5. **महिला खेळाडुंच्या व्यक्तिमत्वावर सामाजिक संमस्यांचा होणारा परीणाम** 34

Sterling Research *ISBN: 978-93-91773-72-4*

EXPLORING THE NONLINEAR OPTICAL PROPERTIES OF ORGANIC NANOMATERIALS

Vinayak Deshmukh
Dept. of Physics, Shri Siddheshwar Mahavidyalaya,
Majalgaon Dist. Beed

Abstract
Organic nanomaterials have emerged as promising candidates for various applications in photonics and optoelectronics due to their unique nonlinear optical properties. This review provides a comprehensive overview of the recent advancements in understanding and exploiting the nonlinear optical characteristics of organic nanomaterials. We discuss the fundamental principles underlying nonlinear optical processes, the synthesis methods of organic nanomaterials, and the techniques for characterizing their nonlinear optical properties. Furthermore, we delve into the diverse applications of organic nanomaterials in areas such as nonlinear optics, bioimaging, sensing, and photonic devices. Finally, we highlight the current challenges and future directions in this rapidly evolving field.

Keywords: *Nonlinear Optical Properties, organic molecules, nanomaterials*

Introduction

Nonlinear optical properties (NLO) are phenomena observed when a material interacts with intense light. Unlike linear optics, where the response is proportional to the incident light intensity, nonlinear effects arise when high-intensity light induces changes in a material's optical properties. These effects find applications in various fields such as telecommunications, laser technology, and quantum computing. Understanding nonlinear optics is crucial for developing advanced optical devices and systems [1].

At the heart of NLO is the nonlinear susceptibility ($\chi^{(n)}$), a tensorial quantity describing a material's response to an external electric field. Nonlinear effects manifest themselves through phenomena like second-harmonic generation (SHG), third-harmonic generation (THG), and four-wave mixing (FWM). SHG involves the generation of light at twice the frequency of the incident beam, while THG produces light at three times the frequency. FWM occurs when multiple incident waves interact to produce new frequencies through a four-wave mixing process.

One of the most fundamental principles in NLO is the nonlinear polarization, which arises due to the nonlinear response of electrons and ions in a material to the incident electromagnetic field. This polarization leads to the generation of higher-order optical harmonics and nonlinear optical phenomena [2].

Materials exhibiting NLO properties can be broadly categorized into two classes: centrosymmetric and non-centrosymmetric. Centrosymmetric materials possess a center of symmetry and exhibit weak or no NLO response. In contrast, non-centrosymmetric materials lack this symmetry, allowing for significant NLO effects. Examples of non-centrosymmetric materials include certain crystals, polymers, and nanoparticles.

Crystal structures play a crucial role in determining a material's NLO properties. Nonlinear effects in crystals often arise from the lack of inversion symmetry in their crystal lattice. Specific crystal classes, such as those belonging to the point groups 32, 42, 43, and m3, are known for their strong NLO responses. Examples include lithium niobate ($LiNbO_3$), potassium dihydrogen phosphate (KDP), and barium borate (BBO).

Polymers are another class of materials with tunable NLO properties. Their flexibility allows for engineering specific molecular structures to enhance nonlinear effects. Electro-optic polymers, for instance, are extensively studied for their potential in high-speed optical modulators and switches [3-5].

Nanoparticles exhibit unique NLO properties due to their small size and high surface-to-volume ratio. Plasmonic nanoparticles, such as gold and silver nanoparticles, are particularly intriguing for their ability to localize electromagnetic fields, leading to enhanced nonlinear responses.

Applications of NLO span a wide range of fields. In telecommunications, nonlinear optical fibers are essential for signal processing and amplification. Nonlinear microscopy techniques, like multiphoton microscopy, enable high-resolution imaging in biological samples with minimal photodamage. NLO also finds applications in optical computing, quantum information processing, and ultrafast spectroscopy.

Despite significant progress, challenges remain in harnessing NLO for practical applications. Improving the efficiency of nonlinear processes, developing new materials with tailored NLO properties, and miniaturizing NLO devices are areas of active research. Furthermore, understanding the underlying mechanisms of nonlinear phenomena at the quantum level is essential for advancing NLO technologies further.

Importance of Organic Nanomaterials

Organic nanomaterials hold significant importance due to their unique properties and versatile applications across various fields. These materials, typically composed of carbon-based molecules, exhibit nanoscale dimensions, offering tailored properties that differ from their bulk counterparts.

One key aspect of organic nanomaterials is their tunability. Through precise control over molecular structure and composition, researchers can engineer organic nanomaterials with specific functionalities, such as optical, electronic, and mechanical properties. This tunability makes them highly attractive for applications ranging from electronics and photonics to biomedicine and environmental remediation [6].

In electronics and photonics, organic nanomaterials offer lightweight, flexible, and low-cost alternatives to traditional inorganic materials. They have been employed in organic light-emitting diodes (OLEDs), organic photovoltaics (OPVs), and organic field-effect transistors (OFETs), enabling advancements in display technologies, solar energy harvesting, and flexible electronics.

Moreover, organic nanomaterials play a crucial role in biomedical applications, including drug delivery, imaging, and tissue engineering. Their biocompatibility and ability to functionalize with targeting ligands make them promising candidates for targeted drug delivery systems and contrast agents in medical imaging.

Overall, the importance of organic nanomaterials lies in their versatility, tunability, and potential to revolutionize various technological and scientific domains, driving innovation and addressing challenges in diverse areas [7].

Motivation for Studying Nonlinear Optical Properties of Organic Nanomaterials

Studying the nonlinear optical properties of organic nanomaterials holds immense promise and motivation due to several compelling reasons:

Tailored Optical Responses: Organic nanomaterials offer a wide range of tunable optical properties, including nonlinear optical responses, owing to their diverse molecular structures and functionalities. Understanding and harnessing these properties can lead to the development of novel optical materials with tailored responses, crucial for applications in telecommunications, photonics, and sensing.

Enhanced Nonlinear Effects: At the nanoscale, organic materials exhibit enhanced nonlinear optical effects compared to their bulk counterparts. This enhancement arises from size confinement, surface effects, and quantum confinement, offering opportunities for designing highly efficient nonlinear optical devices and components with reduced dimensions [8].

Integration in Nanophotonic Devices: The ability to integrate organic nanomaterials into nanophotonic devices opens up avenues for miniaturization and integration in photonic circuits. By exploiting nonlinear optical phenomena in organic nanomaterials, researchers can develop compact, energy-efficient, and high-speed photonic devices for data communication, signal processing, and sensing applications.

Biomedical Imaging and Sensing: Nonlinear optical techniques, such as multiphoton microscopy, offer high-resolution imaging capabilities with reduced photodamage, making them invaluable tools for biomedical research and clinical diagnostics. Organic nanomaterials, with their biocompatibility and functionalization capabilities, hold potential for improving contrast agents and enhancing imaging sensitivity in biological samples.

Emerging Applications: The study of nonlinear optical properties in organic nanomaterials also paves the way for emerging applications in quantum information processing, ultrafast photonics, and nonlinear spectroscopy. These applications capitalize on the unique

quantum mechanical properties and ultrafast dynamics of organic nanomaterials, opening new frontiers in technology and scientific exploration [9].

In conclusion, the motivation for studying the nonlinear optical properties of organic nanomaterials stems from their potential to revolutionize various technological fields, including photonics, biomedicine, and quantum technologies. By unraveling the underlying principles and capabilities of these materials, researchers can pave the way for transformative advancements in diverse areas of science and technology.

Nonlinear Optical Properties of Organic Nanomaterials

Nonlinear optical properties (NLO) of organic nanoporous materials have garnered significant interest due to their unique structure and promising applications in various fields. These materials, characterized by a three-dimensional network of interconnected pores with sizes on the nanometer scale, exhibit intriguing optical behaviors that differ from their bulk counterparts.

Structural Characteristics:

Organic nanoporous materials, such as metal-organic frameworks (MOFs), covalent organic frameworks (COFs), and porous organic polymers (POPs), possess well-defined structures with high surface areas and tailored pore sizes and functionalities. These materials are typically composed of organic building blocks, including aromatic rings, and metal or covalent linkers, offering a high degree of structural flexibility and tunability.

Nonlinear Optical Phenomena:

Organic nanoporous materials exhibit a range of nonlinear optical phenomena, including second-harmonic generation (SHG), third-harmonic generation (THG), and two-photon absorption (TPA). SHG involves the generation of light at twice the frequency of the incident beam, while THG produces light at three times the frequency. TPA occurs when two photons of lower energy combine to excite a molecule to a higher energy state.

Enhanced Nonlinear Effects:

The nanoscale confinement and high surface-to-volume ratio of nanoporous materials lead to enhanced nonlinear optical effects compared to their bulk counterparts. This enhancement arises from quantum confinement effects, increased photon-matter interactions, and confinement-induced structural modifications, such as strain and defects. As a result, organic nanoporous materials offer opportunities for developing highly efficient nonlinear optical devices and components with reduced dimensions and improved performance.

Tailored Optical Responses:

The tunable pore size, surface chemistry, and guest-host interactions in organic nanoporous materials enable the engineering of tailored optical responses. By controlling the composition and structure of these materials, researchers can modulate their nonlinear optical properties for specific applications. For example, introducing guest molecules or

functional groups into the pores can alter the electronic structure and optical transitions, thereby influencing the nonlinear optical behaviour [10].

Applications

The nonlinear optical properties of organic nanoporous materials hold promise for various applications in photonics, optoelectronics, and sensing. In photonics, these materials can be utilized for frequency conversion, optical switching, and mode-locking in laser systems. Their enhanced nonlinear effects and tunable responses make them attractive candidates for next-generation photonic devices with improved performance and functionality

In optoelectronics, organic nanoporous materials can be integrated into nonlinear optical devices, such as modulators, switches, and optical limiters. Their compatibility with flexible substrates and low-cost fabrication techniques make them suitable for applications in flexible and wearable electronics. Additionally, the enhanced nonlinear effects of these materials enable the development of ultrafast optical switches and information processing devices for high-speed telecommunications and computing.

In sensing applications, organic nanoporous materials offer opportunities for label-free detection and sensing of biomolecules, gases, and pollutants. Their large surface areas and selective adsorption properties allow for sensitive detection and rapid response to target analytes. By functionalizing the pore surfaces with specific recognition elements, such as antibodies or aptamers, these materials can be tailored for specific sensing applications in environmental monitoring, healthcare diagnostics, and food safety.

Challenges and Future Directions

Despite the promising potential of organic nanoporous materials in nonlinear optics, several challenges remain to be addressed. These include understanding the underlying mechanisms of nonlinear optical phenomena in these materials, optimizing their nonlinear optical properties for practical applications, and developing scalable fabrication techniques for producing nanoporous structures with desired properties. Additionally, further research is needed to explore novel organic nanoporous materials and advance their integration into functional nonlinear optical devices and systems. Overall, the study of nonlinear optical properties in organic nanoporous materials holds great promise for enabling next-generation photonics, optoelectronics, and sensing technologies with enhanced performance and functionality.

Challenges and future perspectives in the field of nonlinear optical properties of organic nanomaterials encompass a spectrum of scientific, technological, and practical considerations, as follows:

Understanding Fundamental Mechanisms: A major challenge lies in comprehending the fundamental mechanisms governing nonlinear optical phenomena in organic nanomaterials. This entails elucidating the interplay between molecular structure,

electronic properties, and optical responses at the nanoscale. Advanced theoretical models and experimental techniques are essential for unraveling these complex interactions.

Enhancing Nonlinear Effects: Despite the inherent advantages of organic nanomaterials, enhancing their nonlinear optical effects remains a significant challenge. Strategies to optimize material design, surface functionalization, and fabrication processes are required to maximize nonlinear responses. This involves tailoring the molecular architecture, doping with specific chromophores, and engineering interfaces to amplify nonlinear effects.

Stability and Reliability: Ensuring the stability and reliability of nonlinear optical properties in organic nanomaterials poses practical challenges. Environmental factors, such as temperature, humidity, and chemical exposure, can influence material performance over time. Developing robust synthesis methods and protective coatings is crucial for maintaining long-term stability and reliability in real-world applications.

Integration in Devices: Integrating organic nanomaterials into functional devices presents technical challenges related to compatibility, scalability, and performance optimization. Efficient methods for depositing and patterning nanomaterials onto substrates while preserving their nonlinear properties are needed. Additionally, addressing challenges associated with device miniaturization, power efficiency, and interfacial engineering is essential for practical device implementation.

Exploring Novel Materials: Exploring new classes of organic nanomaterials and unconventional fabrication techniques offers exciting opportunities for advancing nonlinear optics. Emerging materials, such as two-dimensional (2D) nanomaterials, organic-inorganic hybrids, and bioinspired architectures, present novel platforms for exploring nonlinear optical phenomena. Harnessing the unique properties of these materials could lead to breakthroughs in optical device performance and functionality.

Multidisciplinary Collaboration: Addressing the complex challenges in nonlinear optics of organic nanomaterials requires interdisciplinary collaboration across fields such as chemistry, physics, materials science, and engineering. Collaborative efforts are essential for developing holistic approaches to tackle scientific questions, advance technology development, and translate research findings into practical applications.

In summary, addressing these challenges and embracing future perspectives in nonlinear optical properties of organic nanomaterials will drive innovation, enable new discoveries, and unlock the full potential of these materials for transformative applications in photonics, optoelectronics, and beyond.

Conclusion

In conclusion, exploring the nonlinear optical properties of organic nanomaterials represents a frontier of scientific inquiry with profound implications for technology and innovation. Through meticulous investigation, researchers have unraveled the unique optical behaviours exhibited by these materials at the nanoscale, offering unprecedented

opportunities for advancing photonics, optoelectronics, and sensing applications. Despite facing challenges in understanding fundamental mechanisms, enhancing nonlinear effects, and integrating into practical devices, the field continues to progress rapidly. Innovative approaches in material design, fabrication techniques, and interdisciplinary collaboration are driving breakthroughs in nonlinear optics. The tunability, versatility, and enhanced nonlinear effects of organic nanomaterials hold promise for revolutionizing optical technologies, enabling the development of compact, efficient, and high-performance devices. From ultrafast optical switches to label-free sensors and beyond, the potential applications of these materials are vast and diverse. Looking ahead, continued exploration and innovation in the nonlinear optical properties of organic nanomaterials will fuel further advancements, shaping the future of photonics and enabling transformative technologies that benefit society as a whole. By addressing existing challenges and embracing new opportunities, researchers are poised to unlock the full potential of organic nanomaterials for next-generation optical devices and systems.

References

1. Shang Y, Li G, Liu Y, Chen J, Li L, Huang W. Nonlinear optical properties of organic nanomaterials. Advanced Optical Materials. 2019;7(17):1900450.
2. Kumar J, Thomas KRJ, Huang SH, Ho KC. Advances in nonlinear optical organic materials. Journal of Materials Chemistry C. 2014;2(32):6422-6436.
3. Zhao YS, Li D, Xia H. Nonlinear optical properties of organic-inorganic hybrid materials and their applications. Journal of Materials Chemistry C. 2013;1(22):3563-3576.
4. Maier SA. Plasmonics: Fundamentals and Applications. Springer Science & Business Media; 2007.
5. Nalwa HS. Handbook of Organic Materials for Optical and (Opto)Electronic Devices: Properties and Applications. Academic Press; 2013.
6. Ribierre JC, Tsuchiya Y, Takeoka Y. Organic materials for deep UV nonlinear optical applications. Advanced Optical Materials. 2019;7(20):1900203.
7. Kaur M, Singh K. Organic nonlinear optical materials and their applications: A review. Polymer Composites. 2020;41(8):3157-3169.
8. Qin L, Wang F, Chen Q. Nonlinear optical properties of organic small molecules and polymers. Polymer Chemistry. 2017;8(25):3839-3861.
9. Zhu H, Zhang H, Meng X, Zhang L, Ma Y. Two-dimensional materials for nonlinear optical applications: recent progress and future perspectives. Nanoscale. 2018;10(16):7633-7652.
10. Zhang H, Xiong S, Wang L, Cao H, Lu Y. Recent advances in nonlinear optical polymers and polymer-based nanocomposites. Polymer International. 2018;67(5):519-532.

SSGP

Publication Certificate

Awarded To

Vinayak Deshmukh

In recognition of the publication of
Research Paper/Article/Chapter

EXPLORING THE NONLINEAR OPTICAL PROPERTIES OF ORGANIC NANOMATERIALS

in Multidisciplinary Edited Book Titled

"STERLING RESEARCH"

ISBN: 978-93-91773-72-4

K.sandhu

Khushraj Singh Sandhu
Editor

Shree Siddhivinayak
Global Publication

 ISBN : 978-811-9998-84-5

Chapter - 40

राजकीय व्यवस्थेमधील तथा राजकारणातील महिलांचा सहभागः एक चिकित्सक अभ्यास

डॉ. तात्याराम परमेश्वर सोंडगे
समाजशास्त्र विभाग प्रमुख
श्री सिध्देश्वर महाविद्यालय, माजलगाव

घोषवारा:- *भारतीय पारंपारिक समाजात स्त्रीला आदिशक्ती, लक्ष्मी, सरस्वती, शारदा, दुर्गा, रणचंडी, महिषासुर मर्दिनी यासारख्या देवी शक्तीच्या रूपात पुजले जात असले तरी "भारतीय समाज जीवनातील पारंपारिक श्रमविभाजनाच्या तत्वाचा विचार करता असे आढळते की, 'चूल व मूल' हे स्त्रीचे कार्यक्षेत्र व घराबाहेरची कामे पुरूषाकडे (Women for Hearth and Man for the field) हे श्रमविभाजनाचे सूत्र होते म्हणजेच एक प्रकारे लिगाधिष्ठीत सुप्त स्तरीकरण व्यवस्था जातीसदृश्य होती." सुरूवातीची कुटुंबे मातृवंशीय असली तरी मातृसताक होती असे म्हणता येते नाही. कारण मातेला अधिकार होता, परंतु सत्ता नव्हती कौटुंबिक समारंभात धार्मिक विधीमध्ये मामाची भूमिका महत्त्वाची होती, संपत्ती व अन्य बाबीचे नियंत्रण आणि देखभाल स्त्रीचा भाऊ करत असे यावरून असे दिसून येते की, मातृवंशीय कुटुंबात पुरुषाची सत्ता होती. कालप्रवाहात उत्पादन साधने, पध्दती आणि राज्य संस्थेत बदल होत गेला तरीही कुटुंब आणि महिलांवर पुरूषांचेच वर्चस्व राहिले, विकासाच्या प्रक्रियेचा एक भाग म्हणुन महिलांना राजकीय क्षेत्रात प्राधान्य क्रमाने नेतृत्वाची संधी देणे संयुक्त राष्ट्रसंघाने आवश्यक मानले. पुढे १९९३ मधील ७३ व्या घटना दुरूस्तीने संपूर्ण भारतभर पंचायतराज व्यवस्थेत महिलांसाठी ३३ टक्के आरक्षण मान्य करून त्यास घटनात्मक दर्जा प्राप्त झाला. आरक्षणमुळे स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या पातळीवर जरी महिलांचा संख्यात्मक राजकीय सहभाग वाढवला असला तरी राष्ट्र आणि राज्य पातळीवर काय ? हा प्रश्न अनुउत्तरीतच राहतो. तेंव्हा महिलांचा सर्वच स्तरावरील राजकीय व्यवस्थेतील सहभाग आणि वावर वाढविण्यासाठी तेथेही महिला आरक्षण हाच उपाय दिसतो आणि असे झाले तरी कौटुंबिक, सार्वजनिक जीवनातील निर्णय प्रक्रियेत महिलांना किती व कसा सहभाग मिळवुन द्यावयाचा हा प्रश्न कायम राहतो त्यामुळे असे*

म्हणावेसे वाटते की, हे सर्व पुरूषांच्या हाती असून त्यावर पुरूष प्रधानतेची मजबुत पकड आहे. प्रस्तुत संशोधनाचा विषय 'राजकीय व्यवस्थेमधील तथा राजकारणातील महिलांचा सहभाग' हा असून संदर्भीत विषयास अनुसरून संशोधन कार्य करत असताना संशोधन विषयाच्या संदर्भात द्वितीयक तथ्य सामग्रीच्या आधारावर वर्णनात्मक मांडणी करण्यात आलेली आहे.

भारतीय पारंपारिक समाजात स्त्रीला आदिशक्ती, लक्ष्मी, सरस्वती, शारदा, दुर्गा, रणचंडी, महिषासुर मर्दिनी यासारख्या देवी शक्तीच्या रूपात पुजले जात असले तरी "भारतीय समाज जीवनातील पारंपारिक श्रमविभाजनाच्या तत्वाचा विचार करता असे आढळते की, " " हे स्त्रीचे कार्यक्षेत्र व घराबाहेरची कामे पुरूषाकडे (Women for Hearth and Man for the field) हे श्रमविभाजनाचे सूत्र होते. म्हणजेच एक प्रकारे लिंगाधिष्ठीत सुप्त स्तरीकरण व्यवस्था जातीसदृश्य होती." (करवा/देशपांडे: १९९७:) जिने लिंगभेदाच्या आधारे स्त्रीला अर्पित कनिष्ठ दर्जा दिला व सामाजिक गतिमत्व नाकारले. " " याकडे दुर्लक्ष करून " - " यावर भर देऊन स्त्रीला गौण लेखण्याचा प्रकार शेकडो वर्षापासून भारतीय समाजात जसा झाला तसाच स्त्री कशी गौण आहे याचा सिध्दांत पाश्चिमात्य समाजात निर्माण झाला. स्त्रीचा मेंदुच पुरुषाच्या मेंदुपेक्षा लहान आहे. म्हणूनच तिची बुध्दीमत्ता कमी व बुध्दीमत्ता कमी म्हणून तिला गौण स्थान असणे स्वाभाविक आहे, असे त्याचे समर्थन दिले गेले. स्त्री कितीही हुशार, व्यवहार चतुर, कृर्तत्वान असली तरी तिला गुलाम तथा शुद्राप्रमाणेच ज्ञानाचा, मताचा अधिकार नाकारला गेला व ज्ञानापासून स्त्रियांना वंचित ठेवून त्यांनी केवळ प्रजोत्पादन व भरणपोषणाचे काम करीत राहावे अशी व्यवस्था उभी करून स्त्रीला गोण लेखण्याचा प्रकार वर्षानुवर्ष होत राहिला अर्थात या विचाराला आधुनिक काळात विशेषतः १९ व्या शतकात विचारवंत तथा उदारमतवाद्यांनी अव्हान दिले, ज्यामध्ये प्रामुख्याने मेरी वोल्स्टन क्राप्ट, जॉन स्टुअर्ट मिल, हफरीयट टेलर, एमिली डेव्हीस, फ्रान्सिस पॉवर कॉब, जोसेफाईन बटलर यांचा समावेश होतो. कारण या उदारमतवादी लेखकांनी पुरूषाप्रमाणेच महिला विवेकी व विचारक्षम आहेत असे मत मांडले." (पवार: २०१२:१२१) "शोषितांसाठी ज्याप्रमाणे थॉमस पेन यांचा **'Right of Man'** हा ग्रंथ महत्त्वाचा ठरला, त्याचप्रमाणे **'Hindication of the rights of Women'** हा मेरी वोल्स्टन क्राप्टचा ग्रंथ स्त्रियांच्या हक्काच्या दृष्टीने महत्त्वाचा ठरला." (करवा/देशपांडे: १९९७) त्याचप्रमाणे जॉन स्टुअर्ट मिल यांचे **'The subjection**

of women' पुस्तक स्त्री- स्वातंत्र्याच्या विचारात भर घालणारे ठरले. उदारमतवादाने सार्वजनिक हक्कांसाठी झगडून शिक्षण, मताधिकार, संपत्तीचा अधिकार व स्त्री-पुरूष समतेचा आग्रह धरला. या उदारमतवादाचा प्रभाव तिसऱ्या जगातील विविध चळवळीवर पडला. "यातुनच भारतासारख्या परंपरावादी देशात ब्राह्मो समाज, प्रार्थना समाज, सत्यशोधक समाज यासारख्या संघटनांनी उदारमतवादी विचार स्त्रिवादी विचारात मांडला आहे." (पवार: २०१२:) न्या. रानडे, महात्मा फुले, सावित्रीबाई फुले, ताराबाई शिंदे, पंडिता रमाबाई, महर्षी विठ्ठल रामजी शिंदे, महर्षी धोंडो केशव कर्वे, गोपाळ गणेश आगरकर, लोकहितवादी, राजर्षी शाहु महाराज, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर इत्यादीनी सार्वजनिक जीवनात संघर्ष करून शिक्षण, मत, संपत्ती इत्यादींचा अधिकार आणि स्त्री-पुरूष समतेचा ज्याप्रमाणे आग्रह धरला त्याचप्रमाणे सईद अहमद खान, सर बद्रोहीन तैय्यबजी यासारख्या मुसलमान समाज सुधारकांनी सुध्दा स्त्री शिक्षणाचा पुरस्कार करून स्त्रियांना शिक्षण देण्याचा विचार मांडला. या सामाजिक सुधारणा चळवळीतुनच स्त्रियांच्या सबलीकरणास शक्ती मिळून महिलांच्या राजकीय समावेशनाचा आणि निर्णय प्रक्रियेतील सहभागाचा मुद्दा पुढे आला. "स्त्री-पुरुष समतेचा विचार करता इतिहास पूर्व काळात लैंगिक संबंधावर कोणतीही बंधने नव्हती. त्यामुळे जन्माला येणाऱ्या बालकांचे पिता कोण हे ठरवणे कठीण होते. परंतु मातृत्व नैसर्गिक आणि दृश्य स्वरूपातील असल्या कारणाने मातृवंशीय कुटुंबे प्रथम अस्तित्वात आली." (धनागरे: २००५) ही कुटुंबे मातृवंशीय होती, मातृसत्ताक नाही. "कारण मुळातच स्त्रीला स्थैर्याची गरज पुरूषाच्या तुलनेत अधिक होती, तशेही प्राणी जगतात मातेलाच तिच्या बाळंतपणासाठी एके ठिकाणी स्थैर्य गरजेचे असते. स्त्री अग्नी घेऊन गुहेत पहिले स्थिर झाली. स्त्री समाज पुरूष समाजा आधी स्थिर झाला असे संशोधक म्हणतात. कारण पुरूषाला स्थैर्याची गरज नव्हती." (मंगला सामत: २०१०) स्थिर झालेली स्त्री आपत्य संगोपनात अनेक वर्षे घालवू लागल्यावर ममत्व आणि वात्सल्य या भावना विकसित होत गेल्या व तिची जंगली अवस्थेतील क्रूरता आणि हिंसकता वेगाने ऱ्हासाकडे वाटचाल करू लागली. आपत्ये माताजवळ दीर्घकाळ राहू लागल्याने त्यांच्यात जिव्हाळा निर्माण होत गेला. जरी आजच्या सारख्या भाऊ-भाऊ, बहीण-भाऊ या भावना त्यांच्यात नव्हत्या तरी एक माता आणि एकाच मातृत्वाने बांधलेल्या या जोड्यात जिव्हाळा निर्माण झाला. हीच भावंडे मोठी होऊन आई, अपत्य, मामा, मावश्या अशांच्या मिळून मातृटोळ्या जमिनीवर स्थिर होऊ लागल्या. त्याच काळात जंगली आणि अपत्य प्राप्तीत

आपला सहभाग असतो. याचीही जाणीव नसलेल्या हिंसक आक्रमक पुरूषांचे मातृत्व टोळ्यावर हल्ले होत असत तेंव्हा यापासून आपले आणि आपल्या अर्भकाचे संरक्षण हा चिंतेचा विषय होता. अशा वेळी कुळा बाहेरील पुरूषांशी शरीरसंबंध टाळण्यातुन भाऊ, मामा, भाचे यांच्या बरोबर स्त्रियांनी शरीर संबंध ठेवणे त्यांना कमी धोक्याचे वाटु लागले. या अर्थाने मातृवंशीय कुटुंबे मातृसत्ताक नव्हती तर रक्ताच्या नात्यातील पुरूषांचे हजारो वर्षापूर्वीच्या मातृवंशीय टोळ्यांवर वर्चस्व होते. पुढे आदिम समाजाच्या (टोळ्या) वस्त्या निर्माण होऊन जमिनीवर त्या टोळ्यांचे वर्चस्व आणि मालकी प्रस्थापित होण्याबरोबरच वैयक्तिक मालमत्तेची कल्पना विकसित झाल्यानंतर कौटुंबिक आणि लैंगिक संबंधावर बंधने आली. यातुन पुढे एक विवाह पध्दती जरी रूढ झाली असली तरी त्यापूवी आपल्या मातृकुटुंबात पुरूषाला सामावुन घेण्याचा प्रयत्न हजारों वर्षे करूनही तो विफल झाल्यावर स्त्रियांनी पुरूष कुटुंबात (पतिगृहातही) आपला समावेश विवाहाद्वारे मान्य केला. त्याकरीता आपल्या नैसर्गिक मातृकुळाचा आधार आणि भावांचे संरक्षण डोळ्यादेखत कोसळू दिले आणि गेल्या ३ ते ४ हजार वर्षे पुरूषाचे हित सांभाळण्यासाठी पत्नीगृहात पती देईल ते स्थान पत्करून त्या आपले जीवन वेचित राहिल्या. ही जी आजची वस्तुस्थिती आहे. तीच स्त्री-पुरूष विषमतेला आणि स्त्रीया पुरूषांच्या स्वामित्वाखाली येण्यास जबाबदार ठरली. भारतीय समाजाचा विचार करता भारतीय परंपरेत पतीला परमेश्वर, स्वामी, नाथ असे जे संबोधले जाते त्यातूनही महिला पुरूषांच्या स्वामित्वाखाली होत्या हेच दिसते.

ऐतिहासिक दृष्टीकोनातुन स्त्री-पुरूष समानतेचा विचार करता स्त्रियांना कायमपणे दुय्यम स्थान आढळते. मार्क्सवादी विचारवंत फ्रेंडरिक एंजेल्स, ऑगस्ट बेबेल, अलेकझांड्रा, कोलोटाम गिल्मन यांच्यासह समाजवादी विचारवंत फुरियर सी सीमा, रॉबर्ट आवेन, विल्यम थॉम्सन इत्यादीनी स्त्री-प्रश्नांचा स्वतंत्रपणे विचार केला. "मार्क्सवादी विचारवंत ऐतिहासिक मांडणी करतांना उत्पादन व्यवस्था आणि त्यातुन निर्माण होणाऱ्या सामाजिक संबंधाना आधार मानतात. कार्ल मार्क्स व फ्रेंडरिक एंजेल्स आपल्या **'The Jarman Idealogy'** या ग्रंथात असे म्हणतात की, "आपत्याला जन्म देण्यातून स्त्री-पुरूषातील आद्य श्रमविभागणी सुरू होते, तर **'The origin of the Family, Private Property and State'** या ग्रंथात पुरूष कुटुंबात भांडवलदार असतो व स्त्री कुटुंबात श्रमिक असते. असा मुद्दा मांडतात." (सुमंत यशवंतः १९९९) म्हणजेच विवाह, कुटुंब, वैयक्तिक संपत्ती आणि राज्यसंस्था यांची उत्पती ही उत्पादन व्यवस्था, यंत्रणा आणि यातुन निर्माण

होणाऱ्या सामाजिक संबंधाशी निगडीत आहे असे विचार मांडले. एंजेल्सच्या मते, आदिम समाजात संपत्तीची कल्पना सामुदायिक होती म्हणुन लैंगिक संबंधाला (विवाहाला) मर्यादा नव्हती. परंतु पुढे आदिम समाजाच्या वस्त्या निर्माण होऊन जमिनीवर त्यांचे वर्चस्व किवा मालकी निर्माण झाल्यानंतर कौटुंबिक, लैंगिक संबंधावर बंधने येऊन वैयक्तिक मालमत्तेची कल्पना विकसित झाली. सुरूवातीची कुटुंबे मातृवंशीय असली तरी मातृसत्ताक होती असे म्हणता येते नाही. कारण मातेला अधिकार होता, परंतु सत्ता नव्हती कौटुंबिक समारंभात धार्मिक विधीमध्ये मामाची भूमिका महत्वाची होती. संपत्ती व अन्य बाबीचे नियंत्रण आणि देखभाल स्त्रीचा भाऊ करत असे यावरून असे दिसून येते की, मातृवंशीय कुटुंबात पुरूषाची सत्ता होती. कालप्रवाहात उत्पादन साधने, पध्दती आणि राज्य संस्थेत बदल होत गेला तरीही कुटुंब आणि महिलांवर पुरुषांचेच वर्चस्व राहिले. **कुंकुम अंगारी आणि उमा चक्रवती** यांच्या मते, भांडवलशाही व्यवस्थेलाही लिगभेदावर आधारित श्रमविभागणी बदलता आली नाही. आर्थिक, राजकीय, स्थित्यांतरे या स्थितीत बदल करू शकले नाहीत. राजकीय आणि आर्थिक घडामोडींचा महिलांच्या जीवनांवर आणि दर्जावर फारसा फरक पडला नाही. उलट त्यांच्या सुरक्षेसाठी बालविवाह, केशवपण आणि सती प्रथा, पडदा पध्दती इत्यादी सारख्या प्रथा आणि परंपरा सुरू होऊन रूढ झाल्या.

"भारतीय समाजात धर्मशास्वाच्या काळात काही स्त्रियांनी राजकीय, सामाजिक, आर्थिक आणि ज्ञानाच्या क्षेत्रात आपल्या कार्याचा ठसा उमटवला विशेषतः पुरूष प्रधानतेची चौकट मोडुन मैत्रेयी, गार्गी, लोपमुद्रा यासारख्या महिलांनी ज्ञानाच्या क्षेत्रात प्रवेश केला. मध्ययुगीन काळात राष्ट्रमाता जिजाऊ, महाराणी येसुबाई, महाराणी ताराबाई या राजघराण्यातील आणि उमाताई दाभाडे यासारख्या कर्तबगार महिलांनी शिवकाळात राज्यकारभारात भरीव योगदान दिले. मूलकी कारभाराची सूत्रे येशुबाईकडे सोपवुन महिलांना सत्तेत समान वाटा हा विचार छत्रपती संभाजी राजांनी राजेशाहीच्या काळात राबवून स्त्री शक्तीचा सन्मान केला हा निर्णय राबवितांना त्यांनी येशुबाईना केवळ 'नामधारी' मूलकी कारभारी बनविले नाहीतर आणखी दोन पाऊले पुढे टाकली. येशुबाईना राजपत्रे, राज्यव्यवस्थेचे हुकूम करण्याची परवानगी बहाल केली. **'श्री सखी राज्ञी जयती'** असा शिक्काही दिला. पेशवाईच्या काळात गोपिकाबाई, आनंदीबाई, राधाबाई या पेशवे स्त्रियांनी राजकारणात विशेष रस दाखविला. तर मस्तानी, अहिल्याबाई होळकर यांनी विशेष कर्तृत्व दाखविले." (गाठाळः २०१३) असे असले तरी राजघराण्यातील या महिलांनी

देखील पुरूषप्रधान समाज व्यवस्थेच्या चौकटीत राहुनच त्या व्यवस्थेला अभिप्रेत असलेल्या भूमिका वठविल्या. काळाची बंधने आणि पुरूष प्रधान व्यवस्थेच्या मर्यादांमुळे पुरूष सत्तेच्या अभेद्यपणाला त्या स्पर्श करू शकल्या नाहीत. ब्रिटीश कालखंडात तथा स्वातंत्र्य लढ्याच्या काळात राणी लक्ष्मीबाई, बेगम झलकारीबाई, बेगम हजरत महल, मैना पेशवे, नर्तकी अजीजान बेगम, झीनत महल यांनी १८५७ च्या उठावात ब्रिटिशांच्या विरोधात संघर्ष केला. पुढे १८८५ मध्ये राष्ट्रीय कॉंग्रेसची स्थापना झाली, तरी १८९५ पर्यंत ॲनी बेझंट यांचा अपवाद वगळता राष्ट्रीय कॉंग्रेसच्या अधिवेशनात महिला उपस्थित राहात नव्हत्या. परंतु भारताच्या राजकीय पटलावर महात्मा गांधीचा उदय झाल्यानंतर "गांधीजीनी स्त्रीया राष्ट्राच्या नागरीक असल्यामुळे त्यांनीही पुरूषांच्या बरोबरीने स्वातंत्र्याच्या चळवळीत सहभाग घेतला पाहिजे अशी भूमिका मांडली." (गाठाळः २०१३) त्यामुळे स्वातंत्र्य लढ्यातील स्त्रियांच्या सहभागास चालना प्राप्त होऊन अनेक महिलांनी स्वातंत्र्य लढ्यात आपले योगदान दिले. स्वातंत्र्योत्तर काळात विजयालक्ष्मी पंडीत, सुचेता कृपलानी, अरूणा असफ अली, सरोजिनी नायडू, डॉ. सुशीला नायर, राजकुमारी कौर, अनुसया काळे, मणिबेन पटेल, व्हयांलेट अल्वा, लिलाताई पाटील इत्यादी स्वातंत्र्य चळवळीत सक्रीय सहभागी असलेल्या स्त्रियांनी संसद तथा विधान भवनात लोकप्रतिनिधी म्हणुन आपल्या कार्यकर्तृत्वाचा राज्य, राष्ट्रीय व आंतराष्ट्रीय पातळीवर ठसा उमटवला. या पार्श्वभूमीवर स्वातंत्र्यानंतरच्या कालखंडाचा विचार करता भारतीय

राज्यघटनेचे शिल्पकार या नात्याने डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या समाज क्रांतीच्या विचारांचा प्रभाव भारतीय राज्यघटनेवर पडणे अपरिहार्य होते, त्यांनी स्त्रियांच्या हक्काला समतेला आणि मुक्तीला कायद्याचे रूप दिले, **'एक व्यक्ती एक मत'** एवढ्यापुरताच त्यांनी स्त्री-पुरुष समतेचा पुरस्कार केला नाहीतर **'एक व्यक्ती एक मूल्य'** असे नवे क्रांतीसूत्र त्यांनी देशातील स्त्रियांसह सर्व शोषितांच्या हातात दिले. भारतीय राज्यघटनेने स्त्रियांच्या भोवती संरक्षणाचे एक कवच उभे केले. घटनेच्या १४ व्या कलमाने सर्व व्यक्तीना कायदेशीर समानता बहाल करून महिलांना सामाजिक सार्वजनिक जीवनात समान दर्जा व संधी देणारा समतेचा मूलभूत अधिकार दिला. १५ व्या कलमानुसार स्त्री-पुरुष भेद घटनात्मकरित्या नष्ट करून महिला व अन्य दुर्बल घटकांच्या हितांची जोपासना करण्याकरीता विशेष तरतुद करण्याचा अधिकार शासनास देण्यात आला आहे. परिणामतः भारताच्या स्वातंत्र्याबरोबरच येथील स्त्रियांनाही स्वातंत्र्य मिळाले, "आजच्या स्थितीत अनेक

महिला आमदार, खासदार, मंत्री, मुख्यमंत्री जशा झाल्या तशाच एखाद दुसरी महिला प्रधानमंत्री, राष्ट्रपती झाली हे जरी सत्य असले तरी त्याचे प्रमाण अपवाद म्हणावे इतके विरळच दिसते. शिवाय त्यामुळे सर्वच महिलांची परिस्थिती बदलली आहे असेही म्हणता येत नाही. कारण एकूण लोकसंख्येत ४८.४६ टक्के लोकसंख्या महिलांची असताना राजकीय क्षेत्रातील त्यांचा सहभाग आणि वावर आत्यात्यल्पच असल्याचे आढळते." (प्रतियोगिता दर्पण:२०११)

भारतातच नव्हेतर जगभरात सर्वत्र कमी-अधिक प्रमाणात महिलांना दुय्यम दर्जाची वागणूक दिली जाते. तेंव्हा महिलांना समान संधी देवून सामाजिक, राजकीय, आर्थिक आणि सार्वजनिक जीवनात समता प्रदान करणे आवश्यक आहे. महिलांच्या सबलीकरणातील महिलांचा राजकीय सहभाग हा महत्त्वाचा घटक आहे. यासंदर्भात दि.४ व ५ सप्टेंबर १९९५ या दिवशी बिजिंग येथे पार पडलेल्या चौथ्या विश्व महिला संमेलनातील संदेशात संयुक्त राष्ट्रसंघाचे माजी महासचिव **बुतरस घाली** म्हणतात की, "महिलाओंको कानुन की दृष्टीसे और वास्तविक रूप से पुरूषोंकी बराबरी का दर्जा देना बीसवीं शताब्दी की एक महान राजनीतिक परियोजना है। हम २१ वी शताब्दी की और विशेष कार्यक्रम लेकर आगे बढ़ रहे है। इस लिए हम आपस में मिल रहे है। ताकि इस संबंध में आनेवालो कानुनी बाधाओंको दूर किया जा सके और इसे कार्यरूप देने के लिए राजनितीक समझ विकसित की जा सके।" (गोटे:२००४) महिला सबलीकरणाच्या प्रक्रियेत ज्या विविध बाबी महत्त्वपुर्ण आहेत. त्यातील सर्वाधिक महत्वपुर्ण बाब म्हणजे महिलांचा राजकीय सत्ता आणि निर्णय प्रक्रियेतील एकसमान सहभाग आणि त्यासाठी स्त्रियांना विशेष संधी देण्याची आवश्यकता आहे. अशी विशेष संधी राजकीय आरक्षणाच्या माध्यमातुन देण्याचा प्रयत्न भारतात ७३ व्या घटना दुरूस्तीने झालेला दिसतो. त्यामुळे राजकीय क्षेत्रातील महिलांच्या सहभागामध्ये संख्यात्मक वाढ झाली. परंतु प्रत्यक्षात जगात कोणत्याही देशात लिंग समानता आल्याचे आढळत नाही. त्यामुळे महिलांचा राजकारणातील सहभाग जो संख्यात्मकदृष्ट्या वाढलेला आहे. त्याचा राजकारण व समाजाची दिशा बदलून समाज परिवर्तनाच्या दृष्टीने आणि समान भूमिका व समान सत्तेच्या दृष्टीने काही फायदा झाला काय? कारण नॅन्सी रिले या महिलांच्या प्रश्नाच्या अभ्यासिका असे म्हणतात की, "Gender Refer to the different roles men and women ply in society and to the relative power they wield. While gender is expressed differently in different societies, in

no society do men and women perform equal roles or hold equal position of power." (Riley: 1997)

राजकीय व्यवस्थेतील महिलांचा सहभाग पहात असताना जगभरात महिलांना राजकीय क्षेत्रात आणि निर्णय प्रक्रियेत किती बाटा मिळतो, महिलांच्या सहभागाचे नेमके स्वरूप कसे आहे हे अभ्यासणे गरजेचे ठरते, तेव्हा एकूण जगाचा विचार करता "जगात एकूण देशांपैकी स्वीडन व फिनलैंड या दोन देशामध्येच महिलांना पुरुषाप्रमाणे समान राजकिय हक्क व त्यासाठी कायदेशीर संरक्षण देण्याची व्यवस्था आहे." (गोटे: २००४)

भारताच्या संसदेतील लोकसभेत कधीही १४.३६ टक्क्यापेक्षा अधिक महिला निवडून आल्या नसल्या आणि महाराष्ट्राच्या विधानसभेत कधीही १०.३३ टक्क्यापेक्षा अधिक महिला निवडून आल्या नाहीत, परंतु पंचायतराज व्यवस्थेत मात्र महिलांची स्थिती चांगली दिसते. कारण ७३ व्या घटना दुरूस्तीने पंचायतराज व्यवस्थेत महिलांसाठी ३३ टक्क्यापेक्षा अधिक आरक्षण दिले. Indian Institute of Public Administration and Ministry of Panchayati Raj' च्या संकेतस्थळावरून दि. ०१ मार्च २०१३ रोजी पंचायतराज मधील महिलांच्या सहभागाची जी राज्यनिहाय आकडेवारी प्राप्त झाली त्यानुसार पंचायतराजमध्ये महिलांच्या सहभागाची स्थिती संसद व विविध राज्यातील विधीमंडळातील महिला प्रतिनिधीच्या सहभागाच्या तुलनेत अधिक आढळते. कारण संपूर्ण भारतात ७३ व्या घटना दुरूस्तीने पंचायतराज व्यवस्थेत ३३ टक्के आरक्षण दिले. शिवाय बिहार, मध्यप्रदेश, उत्तराखंड, महाराष्ट्र, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, छत्तीसगढ यासारख्या राज्यांनी महिलांसाठी पंचायतराज व्यवस्थेत ५० टक्के आरक्षण दिले. त्यामुळे महिलांच्या सहभागात लक्षणीय वाढ होऊन आज घडीला पंचायतराज व्यवस्थेत ४६ टक्याहून अधिक महिला प्रतिनिधी आढळुन येतात.

"१९५२ च्या पहिल्या लोकसभेपासून ते ? 88 च्या १७ व्या लोकसभेपर्यंत कोणत्याही लोकसभेच्या सार्वत्रिक निवडणुकीतून लोकसभेत १४.३६ टक्के पेक्षा अधिक महिला खासदारांची संख्या आढळत नाही. म्हणजेच संसदेच्या कनिष्ठ सभागृहात आजपर्यंत कधीही महिला खासदारांची संख्या १५ टक्के किंवा त्यापेक्षा जास्तीत राहिली नाही. सन १९५२ ते २०१९ या कालावधीत लोकसभेच्या ज्या १७ सार्वत्रिक निवडणुका झाल्या. त्यामध्ये ९५९६ खासदार निवडून आले त्यापैकी ८९३५ पुरूष खासदार (९३.११ टक्के) तर ६६१ महिला खासदार (६.८८ टक्के) असे

प्रमाण दिसते. महाराष्ट्र विधानसभेचा विचार करता १९६२ ते २०१९ या कालखंडात १३ विधानसभा सार्वत्रिक निवडणुका झाल्या. त्यामध्ये कोणत्याही विधानसभा सार्वत्रिक निवडणुकीत १०.३३ टक्यापेक्षा अधिक महिला आमदार झाल्या नाहीत. सन १९६२ ते २०१९ या काळात महाराष्ट्र विधानसभेच्या १३ सार्वत्रिक निवडणुका झाल्या. त्यातुन ३६८४ लोक आमदार झाले. त्यातील स्त्री-पुरूष प्रमाणाचा विचार करता यामध्ये पुरूष आमदारांची संख्या ३५२३ (९५.62 टक्के) तर महिला आमदारांची संख्या केवळ १६१ (४.३७ टक्के) इतकी आढळते."

महिलांना समान अधिकार, समान हक्क, समान संधी आणि सहभाग घेण्याचा अधिकार राज्यघटनेने दिला असला तरी प्रत्यक्षात त्यांचा राजकीय आणि निर्णय प्रक्रियेतील सहभाग अत्याल्पच राहिला आहे तो या अर्थान की, जवळपास एकूण लोकसंख्येत ४८.४६ टक्के असणाऱ्या स्त्रिया ज्याप्रमाणे वेगवेगळ्या क्षेत्रात उपेक्षित राहिल्या, त्याचप्रमाणे त्या राजकीय क्षेत्रात आणि निर्णय प्रक्रियेत वेगवेगळ्या पातळीवर उपेक्षितच राहिल्या. अर्थात यास काही अपवाद असु शकतात. त्यामुळे एका अर्थाने वर्षानुवर्ष उपेक्षितांचे जीवन जगणान्या स्त्रीया स्वातंत्र्य प्राप्तीनंतरही उपेक्षितच राहिल्या. परिणामतः लोकसंख्येतील जवळपास ५० टक्के मनुष्यबळ आणि बुध्दीमत्ता वेगवेगळ्या सबबीवर सातत्याने नाकारण्यात आल्याचे चित्र पहावयास मिळते.

संदर्भ ग्रंथ सूची:

१. पवार वैशाली २०१२, महिलांच्या सत्ता संघर्षाचा आलेख, डायमंड पब्लिकेशन्स, पुणे,

२. सामत मंगला- २०१० मे २९, लोकसत्ता (चतुरंग),

३. सुमत यशवंत- १९९९, स्त्री मुक्तीची पहाट, मिळूनी सा-याजणी, पुणे

४. युनायटेड नेशन्स डाक्युमेंट-१९९१, वुमेन चॅलेंजस टू द इयर २०००, युनायटेड नेशन्स प्रकाशन न्यूयॉर्क,

५. जाधव तुकाराम (संपादक)-२०१३, महाराष्ट्र वार्षिकी २०१३, द यूनिक इन्स्टिट्युट ऑफ हायर लर्निंग,

१२०२/३९ शिरोहे रोड, पुणे,

६. चोरमारे विजय-२००४, स्त्री सत्तेची पहाट, एक्सप्रेस पब्लिशिंग हाऊस कोल्हापुर,

७. गोटे (गव्हाणे) शुभांगी -२००४, महिला सबलीकरण स्वरूप व समस्या, वरद पब्लिकेशन्स औरंगाबाद,

८. National Commission for women -2001, Status of women in India, Parliament of India, Rajya Sabha

Statistical Information (1952-2013), Rajya Sabha Secretariat New Delhi. 2014 Printed by the general

manager, Govt. of India, Press minto Road, New Delhi-110002,

९. योजना (मासिक)-२०११, प्रकाशन विभाग, माहिती आणि प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार,

१०. Indian Institute of Public Administration and ministry of Panchayatiraj (website-

http://www.iipa.org.in) Date 10/04/2014.

Executive Editor
Dr. Priti Pohekar M.A., Ph.D.
Principal
Swa. Sawarkar Mahavidyalaya, Beed

Chief Editor

Dr. Ramesh Khandagle M.Com., Ph.D.
Head & Associate Professor
Department of Commerce
Swa. Sawarkar Mahavidyalaya, Beed
Member – Board of Study (Business Economics)
Dr. B.A.M. University, Ch. Sambhajinagar

Dr. Arvind Rayalwar M.Com., Ph.D.
Associate Professor
Department of Commerce
Swa. Sawarkar Mahavidyalaya, Beed

Editorial Board
Dr. D.B. Nagargoje (Professor & Head, Dept. of Economics)
Dr. J.K. Bhalerao (Professor & Head, Dept. of Public Administration)
Mr. N.B. Shinde (Head, Dept. of Sociology)
Dr. B.N. Deo (Asst. Professor, Dept. of Commerce)
Dr. I.R. Bhagat (Asso. Professor, Dept. of Commerce, YC College, Ambajogai)

ISBN 978-81-19998-44-5
INR : ₹600

Published by

TARAN PUBLICATION
www.taranpublication.com
Email: taran.publication@gmail.com

ANORA

ANORA

ROLE OF WOMEN IN SOCIO-ECONOMIC DEVELOPMENT OF INDIA

Bhartiya Shikshan Prasarak Sanstha Ambajogai's
Swa. Sawarkar Mahavidyalaya,
Beed (Maharashtra)

Role of Women in Socio-Economic Development of India

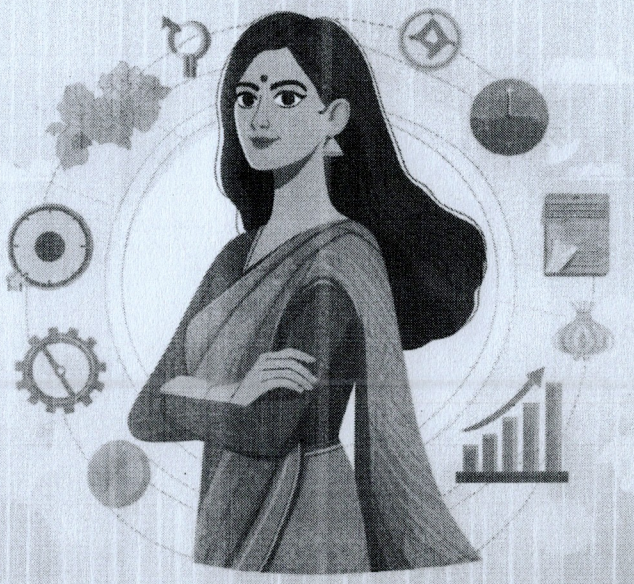

Executive Editor
Prin. (Dr.) Priti Pohekar

Chief Editor
Dr. Ramesh Khandagale
Dr. Arvind Rayalwar

Bhartiya Shikshan Prasarak Sanstha Ambajogai's

Swa. Sawarkar Mahavidyalaya, Beed (Maharashtra)

Role of Women in Socio-Economic Development of India

Executive Editor
Prin. Dr. Priti Pohekar

Chief Editor
Dr. Ramesh Khandagle
Dr. Arvind Rayalwar

Taran Publication
New Delhi

Role of Women in Socio-Economic Development of India

Edited By: Prin. Dr. Priti Pohekar, Dr. Ramesh Khandagle, Dr. Arvind Rayalwar, Dr. D.B. Nagargoje, Dr. J.K. Bhalerao, Mr. N.B. Shinde, Dr. B.N. Deo, Dr. Indrajeet R Bhagat

TARAN PUBLICATION
70 Om Vihar phase - III,
Uttam Nagar West, New Delhi
www.taranpublication.com
Email: taran.publication@gmail.com
Contact: +91-8178286638

Text © Authors 2024

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced or used in any form or by any means-photographic,electronic or mechanical, including photocopying, recording, taping, or information storage and retrieval systems-without the prior written permission of the author.

The views expressed by the authors in their articles, review etc, in this book are their own.The Editor, Publisher are not responsible for them.

ISBN : 978-81-19998-84-5

Edition: March 2024

Price : ₹600/-

Message

Dear Readers,

It gives me immense pleasure to extend my warmest greetings on the publication of the edited eBook on "The Role of Women in Socio-Economic Development of India," by the Department of Commerce, Swa. Sawarkar College, Beed, on the occasion of International Women's Day.

Women have always been at the forefront of driving positive change and progress in our society. Their contributions, both seen and unseen, have been instrumental in shaping our socio-economic landscape and fostering inclusive growth. This eBook is a testament to the dedication, passion, and resilience of women across India, whose stories and experiences serve as a source of inspiration for us all.

I commend the Department of Commerce for their commendable efforts in compiling this eBook and providing a platform for scholars and researchers to explore and celebrate the multifaceted role of women in our society. Your contributions have enriched our understanding of the challenges faced by women and the opportunities that lie ahead in achieving gender equality and empowerment.

As the President of B.SP.S. Ambajogi, I am proud to support this initiative and applaud the commitment of all those involved in its publication. I am confident that this eBook will serve as a valuable resource for students, researchers, policymakers, and anyone interested in understanding and promoting gender equality and women's empowerment.

I extend my heartfelt congratulations to the Department of Commerce, Swa. Sawarkar College, Beed, and all the contributors for their hard work and dedication in bringing this eBook to fruition. May it inspire meaningful conversations and actions towards creating a more equitable and inclusive society for all.

With warm regards,

Dr. Surendra Alurkar

President,
Bhartiya Shikshan Prasarak Sanstha, Ambajogai

Index

Chapters	Title	Page No.
1.	A STUDY OF OPPORTUNITIES AND CHALLENGES FACED BY WOMEN ENTREPRENEURS IN INDIA *Dr. Ramesh Tarkram Khandagale*	1
2.	CASE STUDY OF THE PHOGAT SISTERS IN PROMOTING SOCIAL ACCEPTANCE OF WOMEN IN WRESTLING *Dr. Vasant Gajaba Zende*	8
3.	THE ROLE OF EDUCATION IN ENHANCING WOMEN'S STATUS IN INDIA: EDUCATING FOR EMPOWERMENT *D. N. Gatlewar, V. G. Mane, G. T. Rathod*	13
4.	"PERSPECTIVE OF WOMEN TRADERS TOWARDS STOCK MARKET" *Dr Rupa N Gilda*	21
5.	PROBLEMS & CHALLENGES FACED BY WORKING WOMEN IN INDIA: AN OBSTACLE FOR WOMEN WORK PARTICIPATION *Dr.Savita G.Joshi*	30
6.	ENTREPRE NARIS: A HIDDEN POWER OF WOMEN SHAPING THE ECONOMIC GROWTH AND DEVELOPMENT OF INDIA. *Dr. Sathvik S*	37
7.	"TRIBAL WOMEN'S SOCIO-ECONOMIC EMPOWERMENT: AN INDIAN PERSPECTIVE" *Dr. Sudarshan Annasaheb Aher*	48
8.	EMPOWERING THE BACKBONE: THE INTEGRAL ROLE OF WOMEN IN RURAL DEVELOPMENT IN INDIA *Ms. Saniya Ulhas Shiurkar*	55
9.	WOMEN ENTREPRENEURSHIP CONTRIBUTION IN ECONOMIC DEVELOPMENT *Gaya Nagarao*	58

10.	ISSUES AND DIFFICULTIES FACED BY INDIAN URBAN WORKING WOMEN *Jyoti Chawla*	61
11.	KAMALA DAS AND HER CONTRIBUTION TO INDIAN ENGLISH LITERATURE *Mundhe Pravin Dattatraya*	68
12.	A STUDY ON ONLINE FEMALE ENTREPRENEUR: AN OVERVIEW *Dr. Meena Wadgule*	71
13.	QUEST FOR FEMALE IDENTITY IN MAYA ANGELOU'S AUTOGRAPHY *Mrs. Bhondave Sangita Sachin*	80
14.	WOMEN IN CORPORATE LEADERSHIP IN INDIA: TRENDS, CHALLENGES, AND OPPORTUNITIES *Dr. Nilesh Babasaheb Gawade*	84
15.	TECHNOLOGY AND INNOVATION FOR WOMEN'S EMPOWERMENT *Dr. Jyoti Rameshrao Kote*	91
16.	THE CONTRIBUTION OF INDIAN WOMEN TO THE DEVELOPMENT OF SCIENCE AND TECHNOLOGY: A SCHOLARLY EXAMINATION *Mr. Anant Deshpande, Mr. Bhargavram Choudhary*	97
17.	EMPOWERING WOMEN: ENTREPRENEURSHIP IN THE DIGITAL ERA *Mr. Amit Yadav*	101
18.	THE SIGNIFICANCE OF EDUCATION IN ENHANCING SOCIO-ECONOMIC STATUS OF WOMEN : A CRITICAL ANALYSIS *Dr. Arti Bhatnagar*	107
19.	WOMEN BEHAVIOUR TOWARDS INVESTMENT LIFE INSURANCE POLICIES IN HYDERABAD CITY *Mrs. K. Bharati, Dr. D.Sri Latha*	113
20.	WOMEN EMPOWERMENT IN INDIA: OPPORTUNITIES AND CHALLENGES *Mrs. Maya Ravindra Jadhav*	121

21.	WORK-LIFE AND HEALTH BALANCE AMONG THE MAHARASHTRIAN WOMEN *Dr. Swati Kulkarni*	126
22.	THE ROLE OF WOMEN EMPOWERMENT AND ENTREPRENEURSHIP IN INDIA: A CATALYST FOR SOCIO-ECONOMIC PROGRESS *Dr. Arvind Rayalwar*	131
23.	WOMEN'S ENTREPRENEURSHIP: EXPLORING THE CHALLENGES AND OPPORTUNITIES FOR WOMEN ENTREPRENEURS IN INDIA'S SOCIO ECONOMIC LANDSCAPE. *Mrs. Adode S.N, Dr. Arvind P. Rayalwar*	138
24.	ROLE OF INDIAN WOMEN IN SOCIAL AND ECONOMIC DEVELOPMENT OF NATION *Dr. S.S. Sasane*	146
25.	ROLE OF WOMEN IN SOCIO ECONOMIC DEVELOPMENT OF INDIA: A COMPARATIVE ANALYSIS OF WOMEN ENTREPRENEURS IN HANDICRAFT SECTOR WITHIN MARATHWADA REGION. *Anantha Subhash Kharat, Dr. Aparna S Saraf*	150
26.	A STUDY ON WOMEN'S EMPOWERMENT IN RURAL ECONOMY IN INDIA *Dr. Deepak Deshmukh*	158
27.	EDUCATION AND WOMEN'S EMPOWERMENT IN INDIA: A PATH TO SUSTAINABLE DEVELOPMENT *Dr. Sujata Shivaji Gadakh*	164
28.	EXAMINING THE ECONOMIC INFLUENCE OF THE LAKHAPATI DIDI INITIATIVE: EMPOWERING WOMEN IN RURAL INDIA *Dr. D.B. Nagargoje*	169
29.	ROLE OF WOMEN- LED FPO IN WOMEN ENTREPRENEURSHIP: A CASE STUDY OF WE WE FOR EMPOWERMENT AND CHAFA FPC LTD. *Jyoti E. Kolhe, Dr. S. G. Patil*	174

30.	RSETI FOSTERING THE SELF EMPLOYMENT WITH SKILL DEVELOPMENT : A CASE STUDY FROM KOLHAPUR DISTRICT *Dr. Hanumanth S. Patil, Mr. Rajendra S.Panditrao*	185
31.	महिला उद्योजक -आव्हाने आणि संधी सौ.माधवी राजशेखर शेटे, जिनमती शांतीनाथ मुरगुंडे	192
32.	भारताच्या सामाजिक आणि आर्थिक विकासात महिलांचा सहभाग प्रा. डॉ. पवार दत्ता बलभिमराव	198
33.	ग्रामीण विकास में महिलाओं की भूमिका डॉ.विजय पाटिल	205
34.	सामाजिक आर्थिक विकासात महिला स्वयं-सहायता बचत गटांची भूमिका डॉ.चांडक पवनकुमार विजयकुमार	212
35.	भारतातील महिलांच्या कार्यात्मक सहभागाची स्थिती डॉ. ओंकार बाळकृष्ण खिस्ते, प्रा. महेश बळीराम बजगुडे	220
36.	महिला सशक्तिकरण: शिक्षा की भूमिका के विशेष संदर्भ में डॉ. पुष्पा रमेश	225
37.	आदिवासी अर्थव्यवस्था: महिलांची भूमिका *प्रा. अनिता एस गायकवाड*	233
38.	कृषी व्यवसायात भारतीय महिलांचे योगदान *डॉ. मनीषा जगन्नाथ झोंबाडे*	244
39.	महाराष्ट्राच्या सामाजिक क्षेत्रातील वुमेन्स आयडॉल्स *डॉ.भालेराव जे.के.*	249
40.	राजकीय व्यवस्थेमधील तथा राजकारणातील महिलांचा सहभाग: एक चिकित्सक अभ्यास *डॉ. तात्याराम परमेश्वर सोंडगे*	256
41.	क्रिडाक्षेत्रातील भारतीय महिलांचा सहभाग व कामगीरी *डॉ.छत्रपती बाबुराव पांगरकर (वैरागर)*	266

BC-2023-24

INNOVATIVE & APPLIED RESEARCH IN ANIMAL SCIENCES

VOLUME-II

Sponsored National Conference by

Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University,
Chhatrapati Sambhaji Nagar,
&
Indian Science Congress Association Amravati Chapter
& Zoological Society of India, Gaya.

Organized by

Vidya Vikas Mandal Pathrud`s
SHANKARRAO PATIL MAHAVIDYALAYA, BHOOM.

EDITORS
Dr. Nitin Padwal
Mr. Gopal Khandare
Ms. Dipti Giri

Lulu Publication

Price: 750/-

INNOVATIVE & APPLIED RESEARCH IN ANIMAL SCIENCES

VOLUME - II

Dr. Nitin Padwal

Mr. Gopal Khandare

Ms. Dipti Giri

© 2024 by Authors

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted, in any form or by any means, without prior permission of the author. Any person who does any unauthorized act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages. [The responsibility for the facts stated, conclusions reached, etc., is entirely that of the author. The publisher is not responsible for them, whatsoever.]

ISBN: 978-1-304-58029-0

Published by,
Lulu Publication
3101 Hillsborough St,
Raleigh, NC 27607,
United States.

INDEX

1	OCCURRENCE OF EUASTRUM AT BANGANGA WATER RESERVOIR Prakash B. Jadhavar	1
2	ZOOPLANKTONIC DIVERSITY AND ITS IMPORTANCE FOR FISH PRODUCTION ON MAJALGAON DAM RESERVOIR IN BEED DISTRICT, MAHARASHTRA STATE. INDIA. Sitaram B. Ingole, Vinod B. Kakade*, Prashant K. Sanghai**	5
3	STUDY OF SOME ZOOPLANKTON OF JAKEKUR TANK TQ. OMERGA DIST. DHARASHIV (M.S.) INDIA. Dr. Suryakant D. Kamble	10
4	PREVALENCE OF BOTHRIOCEPHALUS GADELLUS (CHARLES K. BLEND) IN DASYATIS SEPHEN AT RATNAGIRI, WEST COAST OF MAHARASHTRA, INDIA Sandeep Anarse[1], Amol Thosar[2] and Dnyaneshwar Bhutekar[1]	13
5	IMPORTANCE OF CONSERVATION AND MANAGEMENT IN SUSTAINABLE FISH CULTURE Shaikh Hafiz Mahmad	17
6	RELATION BETWEEN MORPHOMETRY OF BODY LENGTH IN FRESH WATER SPECIES CLARIAS BATRACHUS. Shilpa Madhukar Magar[1], Dr.Sunita N. Borde[2], Dr.Prafulla S.Patil[3].	24
7	ICHTHYOFAUNAL DIVERSITY OF KELZAR DAM, DIST. NASHIK, MAHARASHTRA,INDIA. Patil Rakesh B.	32
8	BIOCHEMICAL LIPID ESTIMATION IN COTUGNIA ADASKARAE N.SP. FROM GALLUS DOMESTICUS AT KANNAD. DIST. SAMBHAJINAGAR (M. S. INDIA) Thorat B.S.	36
9	A CALL TO ACTION FOR ENVIRONMENT PROTECTION & CONSERVATION Milind Shirbhate	39
10	HISTOPATHOLOGY Dr. A. B. Khodake	41
11	DIET, FEEDING, AND DIGESTIVE EFFICIENCY OF THE FISH CYPRINUS CARPIO (L.) IN KASARWADI RESERVOIR Archana D. Nagargoje, Dagdu B. Sirsath*	46
12	ON A COLLECTION OF EREBID MOTHS (LEPIDOPTERA) FROM INDIA Mehjabeen Dastagir Jundre[1] Manisha Mategaonkar[2] Aparna Sureshchandra Kalawate[3*]	53

ZOOPLANKTONIC DIVERSITY AND ITS IMPORTANCE FOR FISH PRODUCTION ON MAJALGAON DAM RESERVOIR IN BEED DISTRICT, MAHARASHTRA STATE, INDIA.

Sitaram B. Ingole, Vinod B. Kakade*, Prashant K. Sanghai**

Shri Siddheshwar Mahavidyalaya Majalgaon, Dist Beed. M.S. India.

Eknath Divekar Mahavidyalaya, Varvand, Dist.Pune, M.S.*

Shivaji Mahavidyalaya, Kannad, C.Sambhajinagar, M.S.**

Email- sbingole@yahoo.com

Abstract

Majalgaon Dam was constructed on the River Sindphana which is a tributary of River Godavari, in Beed District (Maharashtra, India) in 1987.The River Sindphana has been under constant threat of pollution by sewage and industrial wastes, disposal of dead bodies, deforestration, excessive useof fertilizers and pesticides, bathing and water development programmes. The dam has a catchment area is 3840 sq. km. It is of great Importance for the region because its water is used for human and cattle consumption, power generation, fish production and irrigation. A total of 33 species of phytoplanktons, 29 species of zooplanktons and 11 species of fishes were identified.

The importance of plankton in fisheries is well established. It has been clearly demonstrated that the zooplankton constitute the only food for the fish fry and the adult fish not only eat them, but also select them as a delectable item.Thus zooplankton have a direct bearing in the fish industry. In India, several studies were conducted in reservoirs elucidating the characteristics of zooplankton.The zooplankton peak was found during summer followed by winter and rainy season.Microfauna (zooplankton) was observed about four groups as Rotifera observed about eleventh species, Copepoda observed about nine species, Cladocera observed seven species and Ostracoda observed about two species.

The macro fauna or fish fauna were observed at the Majalgaon Dam reservoir. There are culture of fish with quick growing varieties of fishes including Indian Major Carps, exotic species have been popular in recent time. There is abundance of the species such as Labeo rohita, Cirrhina mrigal, Catla catla, Cyprinus carpio, Silver carp, Wallago atta, Mystacenbelus armatus, Notoptemus chital, Puntues ticto, Channa staitus, Mystus seenghala, Mystus cavaassius, Eutroplus suratensis, Belon concila, Chela, Tilapia Mossambica, Rohtee alfrediana, Gobius giuris, etc. Fish is economically a very important group of animals be side being used as food. Fish liver is an important source of oil containing Vitamins A and D, several minerals and protein.

ISBN: 978-1-304-58029-0

Key word: Reservoir, Zooplankton, Pollution, Fish production.

Introduction:

India has a large network of river, canals, lakes and ponds, which contribute more than 30% of the total fish production. Fish form one of the most important group of animals for man and have received his attention from ancient time. Majority of our people suffer from hunger and malnutrition. Fish is an excellent food for man and provides protein, fat and vitamin A and D, which are essential for the health of man. Fish is also provide source of vitamin B, it food rich in protein is specially preferred for containing essentially amino acid such as Lysine and methionine abundantly required for formation of phospholecithine in gray matter of the brain unsaturated fat in fish also reduce the risk of formation of high blood cholesterol. Phosphorus and several minerals are also present in it. They have good test and easily digestible. Besides being a rich source of food, fishery provides job opportunities also. By product of fishes i.e. fish manure, isinglass and several other production of commerce.

Considerable studies on fish diversity from different fresh water bodies of India have been carried out during the last few decades Hamilton Buchanan (1822), Day(1878), Mishra (1962), Jayram (1981) Thomus et.al. (1989), Talwar & Jhingrah (1991), Menon (1992), Rao et.al (1999). Sarkar and Banergee (2000), Mishra et.al.(2003). There are over 19000 reservoirs in India. Covering 3, 15,366 ha. And many more are under construction. (Suguman 2000) Reservoir Fishery in India is also important from social economic point of view as it has the potential of providing employment to about 2 million people (Khan Et.al.1999). According to sreenivasan (1993) the Maharashtra is endowed with an area of 1,79,430 ha. Under reservoir and the state produces 516 tones of fish of these area the state fisheries corporation was operating in 6,272 ha. Of reservoir and marketing the catches.

The present investigation was under taken to study the aquatic vertebrate animals with reference to fishes from Majalgaon dam reservoir water. It is a second stage of Jayakwadi Project of Nath Sagar. It is irrigation project of Maharashtra state. It is situated in the latitude $16^{0}16^{8}{}_{N}$ and longitude 73^{0} 26E. It is multipurpose type like irrigation and power production and also fishing purposes (Table No. 1).

Material and Method:

Sample collected and preserved in 4 % solution of formalin. The quantitative and qualitative analysis was carried out by taking 20 ml of concentrate obtained by siphoning the supernatant liquid. The genera of Zooplankton were identified and quantitative determination was carried out referring Needhan and work of Edmondson. Zooplankton were counted by drop count method and the results were converted to organisms per ml of water. The counting was done following the work of Edmondson (1965), APHA, AWWA and WPCF (1985), Trivedy and Goel (1984), Tonapi (1980), Standard key & other literature were used for identification of different species and the identified species were expressed in no. per liter.

ISBN: 978-1-304-58029-0

The fishes were collected from the Majalgaon dam reservoir with the help of fisherman during the year June 2015 – May 2016. The specimen were preserved in 10% formalin and subsequently identified following work of Lagler (1956) Menon and Talwar (1972), Day (1878), Datta Munshi & Srivastav (1968), Jayram (1981) and Talwar & Jhingran (1991).

Result and Discussion:

The importance of plankton in fisheries is well established. It has been clearly demonstrated that the zooplankton constitute the only food for the fish fry and the adult fish not only eat them, but also select them as a delectable item. Thus zooplankton have a direct bearing in the fish industry. In India, several studies were conducted in reservoirs elucidating the characteristics of zooplankton.The zooplankton peak was found during summer followed by winter and rainy season.Microfauna (zooplankton) was observed about four groups as Rotifera observed about eleventh species, Copepoda observed about nine species, Cladocera observed seven species and Ostracoda observed about two species.

Fish as constitute economically a very important group of animals. A large number of dams and reservoir has been constructing during the recent year to provide water for irrigation and power production. These bodies of water offer immense scope for fish culture for successful fish farming in dam and reservoir.

Majalgaon dam reservoir is very productive more work has been carried out of fish fauna. The distribution of fish species is quite variable because of geographical and geological condition.

The Eleven species of the fish fauna in this study belonging to four order and six families are given in the table No. 2 among them order Cypriniformes was dominant with eight species to be followed by the Mastalimbeliformes, Osteoglossifomes, and Ophiocephalifomes each with one species. Valsangkar (1993) recorded 17 indigenous and 5 introduced fish species from Shivaji Sagar reservoir. Sakhare (2001) recorded 23 fish species belonging to 7 orders in Jawalgaon reservoir in Solapur district. Pawar and Madlapure (2002) recorded 11 fish species belonging to 5order in sivur dam. Ingole (2005) recorded 11 fish species occurrence in the during research work at Majalgaon dam reservoir.

Table No. 1: Highlight of Majalgaon dam reservoir.

Name	Majalgaon dam Jaikwadi project Stage – II
Type	Multipurpose (Irrigation and Power production)
River	Sindphana
Basin	Godavari
Location	2 Km. u/s of Majalgaon Dist-Beed (M.S.)
Year of start of Construction	1977
Year of completion	1987

ISBN: 978-1-304-58029-0

Catchment area	3840 Sq.Km.
A.V. Rainfall in C.A.	800 mm.
Submerged area	7813 Ha.

Table No. 2: Fish diversity from Majalgaon Dam reservoir

Class – Pisces	*Family -3 – Siluridae*
Sub-class – Teleostomi	*Species – 8 – Wallago altu*
Order 1 – Cypriniformes	*Order – 2 – Mastaembeliformes*
Family 1 – Cyprinidae	*Family 4 – Mastamecembelidae*
Species 1 Catla Catla	*Species 9 – M. armatus*
Species 2 – Labeo rohita	*Order 3 – Osteoglossiformes*
Species 3 – Cirrhina mrigal	*Family 5 – Notopteridae*
Species 4 – Cyprinus carpio	*Species – 10 – N. chital*
Speices 5 – Silver carp	*Order 4 – Ophiocephaliformes*
Species 6 – Barbus ticto	*Family 6 – Channidae*
Family 2 – Bagridae	*Speices – 11 – Channa Staitus*
Species 7 – Mystus seenghala	

References:

1. **Datta Munshi and Srivastava M.P. (1968)**-Natural history of fishes and systematic of fresh water fishes of India. Narendra Publication House Delhi.
2. **Day F. (1944)** - The fishes of India being a natural history of the Burma and Cylon. Fourth Indian Reprint vol. I & II Jagmander Book Agency, New Delhi.
3. **Hamilton B.F. (1822)** - An account of fishes found in the river Ganga and it branches Edinburg and London VIII + 400 p.p. plate 39.
4. **Ingole S.B. (2005)** - Some aspect of Hydro biological studies of Majalgaon dam Dist .Beed (M.S.) Ph.D. Thesis, S.R.T.M.U. Nanded (M.S.)
5. **Jayaram K.C. (1981)** -The freshwater fishes of India Pakistan, Burma and Shrilanka, Hand Book Zoological Survey of India No. 2, XII + 475 pp.
6. **Khan A.A., Kartha K. N., Percy Dawson and George (1991)** - Fish harvesting system in Indian reservoir proc. Of Nat. workshop on 1000 energy fishing 8-9 August 1991.
7. **Lagler K.F. (1956)** - Freshwater fishery biology W.M. C. Brown and Co Jowa.
8. **Misra K.S. (1962)** -An aid to the Identification of the common commercial fishes of India and Pakistan. Rec. Indian Mus. 57 (1-4) 1-320.

ISBN: 978-1-304-58029-0

9. **Rao P.S. (2000) -** Problems of management of fish marketing and co. oprative FIE PC/73/10 Bombay.

10. **Sarkar L. and Banerjee S. (2000)** Ichthyofauna of Damodar river system pro. zool soci. Calcutta 53(1) : 41-54

11. **Sugunan (2000) -** Reservior fishery of India FAO fisheries Tech. paper No. 345. FAO Rome 1-424.

12. **Srinivasan (1993) -** Reservoir fishery of India, fishing chimes 13(1) : 18-21

13. **Sakhare V.B. (2001) -** Ichthyofauna of Jawalgaon Reservior in Solapur district of (M.S) Aqua Biol. 16(1) 31-33.

14. **Talwar P.K. and Jhingran A.G. (1991) -** Inland Fishes of India and Adjacent countries Vol. 1 & 2. Oxford & BH Publishing co. Privt. Ltd.

ISBN: 978-1-304-58029-0

BC-23-24

भोगावती शिक्षण प्रसारक मंडळाचे,
भोगावती महाविद्यालय, कुरूकली, ता.करवीर, जि.कोल्हापूर.
मराठी विभाग

'मराठी साहित्यातील पर्यावरणाचे विविधांगी चित्रण'

संपादक
प्रो.डॉ.सविता अशोक व्हटकर

ISBN 978-93-94617-62-9

Scanned with OKEN Scanner

मराठी साहित्यातील पर्यावरणाचे विविधांगी चित्रण

संपादक

प्रो. डॉ. सविता अशोक व्हटकर

संपादक मंडळ

प्रा. डॉ. वैशाली श्रीकांत गुंजेकर

प्रा. विश्वास मारूती पाटील । प्रा. नमिता अनिलकुमार पाटील

प्रा. गणेश कृष्णात महाडीक । प्रा. रणजीत एकनाथ हसूरकर

© संपादकांकडे

प्रकाशक

दादासाहेब काका जगदाळे

तेजश्री प्रकाशन

महालिंग मळा, यशवंत कॉलनीजवळ,

मु.पो. कबनूर, ता. हातकणंगले,

जि. कोल्हापूर - ४१६ १३८

मो. ८२७५६३८३९६

प्रथम आवृत्ती : २९ नोव्हेंबर, २०२३

ISBN : 978-93-94617-62-9

मुद्रक

भारती मुद्रणालय

८३२, ई वॉर्ड, शाहूपुरी ४थी गल्ली, कोल्हापूर.

फोन नं.: ०२३१-२६५४३२९

मूल्य : रु. ४००/-

'मराठी साहित्यातील पर्यावरणाचे विविधांगी चित्रण' या विषयावरील शोधनिबंधाचे पुस्तक भारती मुद्रणालय, ८३२, ई वॉर्ड, शाहूपुरी ४थी गल्ली, कोल्हापूर येथे छापून तेजश्री प्रकाशन, इचलकरंजी यांनी प्रकाशित केलेले आहे. या पत्रिकेत प्रकट झालेल्या मतांशी संपादक, प्रकाशक व मुद्रक सहमत असतीलच असे नाही.

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

१. मराठी साहित्य आणि पर्यावरण	प्रा. ज्ञानेश्वर नामदेव खिलारी	१३
२. मराठी साहित्यप्रकारातील पर्यावरणाचे विविधांगी चित्रण : कविता	सौ. तनुजा सुरेश मुळे	१४
३. मराठी साहित्यातील स्त्रीवादी प्रवाहातील पर्यावरणाचे विविधांगी चित्रण	हर्षाली बापू खंदारे	१७
४. 'चकवाचांदण' या मारुती चितमपल्ली यांच्या आत्मकथनातील पर्यावरणीय अभ्यास	डॉ. संगीता गणपतराव घुगे	१९
५. संत एकनाथांच्या भारूडातील सामाजिक पर्यावरण	प्रा. डॉ. सविता अशोक व्हटकर	२३
६. 'चकवाचांदण एक वनोपनिषद' मधील पर्यावरणीय संदर्भ	डॉ. ल. ना. वाघमारे	२७
७. मराठी ललित साहित्य आणि ललित गद्यातील पर्यावरणीय संदर्भाचे वेगळेपण	डॉ. युवराज देवाळे	२९
८. प्रवासवर्णनांचा पर्यावरणीय अभ्यास	प्रा. डॉ. वैशाली श्रीकांत गुंजेकर	३१
९. मराठी कादंबरी साहित्य प्रकारातील पर्यावरणाचे विविधांगी चित्रण	डॉ. विकास शंकर पाटील	३५
१०. फकिरा कादंबरीतील पर्यावरणाचे विविधांगी चित्रण	महेश नारायण आवळे	४०
११. शंकर पाटील यांच्या कथेतील पर्यावरणीय जीवन-जाणीवा	नमिता अनिलकुमार पाटील	४२
१२. चारुता सागरांच्या कथेतील पर्यावरणीयदृष्ट्या उपासमारीचे चित्रण	प्रा. विश्वास मारुती पाटील	४५
१३. निवडक मराठी साहित्यातील पर्यावरणीय संदर्भ	प्रा. योगेश यशवंत हळदवणेकर	४९
१४. १९६० नंतरच्या मराठी ग्रामीण कथेतून प्रकट झालेले पर्यावरणाचे चित्रण: स्वरूप व वैशिष्ट्ये	हनमंत बाबुराव हांडे	५३
१५. 'पक्षी जाय दिगंतरा' व 'रानवाटा' मधील पर्यावरणीय जाणिवा	गौरी अनिलकुमार कुंभार	५८
१६. मराठी साहित्यकृतीतून आलेले धनगर जमातीतील : सांस्कृतिक पर्यावरण	डॉ. संदीप भगवान वाकडे	६०
१७. पर्यावरणीय कृतिशीलतेचे सजग भान बाळगणारे लेखक: डॉ. अनिल अवचट	डॉ. अशोक शेलार	६२
१८. 'चाळेगत' कादंबरीतील समुद्र पर्यावरणाचा ऱ्हास	विजयालक्ष्मी विजय देवगोजी	६६
१९. प्रेमानंद गज्वींच्या नाटकातील सामाजिक पर्यावरण आणि समस्या	प्रा. डॉ. जितेंद्र कदम	७०
२०. 'रंगराव बापू पाटील यांच्या कथेतील पर्यावरणाचे चित्रण'	विजयकुमार शंकरराव शिंदे	७४
२१. शरणांचा पर्यावरण विचार	राजू ब. जुबरे	७७
२२. मराठी साहित्यातील पर्यावरणाचे विविधांगी चित्रण	नर्मदा रा. कुराडे	८१
२३. मराठी साहित्यातील पर्यावरणाचे विविधांगी चित्रण	कु. सरिता सुभाषराव पुनासे	८३
२४. ना. धों. महानोर यांच्या कवितेतील निसर्ग	डॉ. ज्ञानेश्वर गवते	८७
२५. मारूती चितमपल्ली यांच्या ललितगद्यातील पर्यावरण	डॉ. मधुकर बैकरे	८९
२६. संत तुकारामांच्या अभंगगाथेतील पर्यावरणाचे चित्रण	डॉ. राजश्री मनोहर बिसुरे	९२
२७. मराठी साहित्य प्रकारातील पर्यावरणाचे चित्रण - कविता	ज्योती भूषण जोशी	९५
२८. समकालीन मराठी साहित्यातील पर्यावरण विचार	प्रा. बाळासो आण्णा सुतार, प्रा. प्रदीप प्रकाश कदम	९७
२९. मराठी काव्य साहित्यातील पर्यावरणाचे विविधांगी चित्रण	डॉ. संतोष रंगराव शहापूरकर	१०१
३०. पर्यावरणीय ऱ्हासाचे भीषण वास्तव मांडणारी कादंबरी : चाळेगत	किशोर राजाराम पाटील	१०४
३१. माणदेशातील पर्यावरण चित्रण : जांभळमाया	प्रा. मच्छगंधाली नितीन तारळेकर	१०६
३२. मराठी कादंबरीतील पर्यावरणीय संवेदन	डॉ. संदीप भुयेकर	१०९
३३. 'मुलगी झाली हो!' नाटक आणि स्त्रीमुक्तीचे पर्यावरण	प्रा. स्मिता कोंडिबा कालभूषण	११६
३४. पर्यावरणीय समीक्षा	प्रा. डॉ. विनोद गायकवाड	११९

Scanned with OKEN Scanner

ना. धों. महानोर यांच्या कवितेतील पर्यावरणीय निसर्ग

डॉ. ज्ञानेश्वर गवते
श्री सिद्धेश्वर कॉलेज माजलगाव जी.बीड
मो. नं. : ७६६६२९२२९४

मानवाच्या आतताईपणामुळे निसर्गचक्रात बिघाड झाला. परिणामी पर्यावरणाचा समतोल ढासळला. संपूर्ण जगात पाच जून हा दिवस जागतिक पर्यावरण दिन म्हणून साजरा केला जातो. प्राचीन साहित्य ते आधुनिक साहित्यापर्यंत मराठी साहित्यात पर्यावरणीय जाणीवा प्रगट झालेल्या आहेत. प्रसिद्ध शास्त्रज्ञ प्रा. बर्नार्ड नोबेल यांच्या मते, पर्यावरण शास्त्र म्हणजे विविध परिसंस्था, प्रणालीच्या परस्पर संबंधाचे संपुरन तत्वांचे शास्त्रीय अध्ययन होय. पर्यावरणातील नैसर्गिक व सांस्कृतिक घटकाचा मानवी जीवनावर जीवन पद्धतीवर होणाऱ्या प्रभावाचा पद्धतशीरपणे व शास्त्रीय दृष्टिकोनातून केलेला अभ्यास म्हणजे ण शास्त्र होय साहित्याचा विषय माणूस आहे. माणूस निसर्गाच अपत्य आहे. त्यामुळे साहित्य निसर्ग, पर्यावरणापासून अलिप्त राहू शकत नाही. मानवी जीवन आणि ज्याचा भोवताल आजूबाजूच्या नैसर्गिक वातावरणाशी निगडित असतो. साहित्य निर्मिती करताना लेखक निसर्गाचा अनुकरण करतो. अरिस्टॉटलचा अनुकृती सिद्धांत या दृष्टीने महत्वपूर्ण आहे. कोणतेही काव्य हे निसर्गाची अनुकृती असते. या सिद्धांताचे तत्व आहे. मानवी जीवनाच्या सर्व क्रिया प्रतिक्रिया निसर्गाच्या अनुकरणातून अभिव्यक्त होत असतात. माणूस हे निसर्गाचा अपत्य तर साहित्य हे माणसाचे अपत्य आहे. त्यामुळे साहित्य आणि नैसर्गिक पर्यावरण यांचा संबंध आहे.

आधुनिक मराठी साहित्यातील निसर्गकवी नामदेव धोंडो महानोर त्यांचे कवितालेखन प्रामुख्याने निसर्गावर आधारित आहे. निसर्गाची भाषा बोलणारे, निसर्गाशी संवाद साधणारे, रसिकांचं बोट धरून त्यांना निसर्गाशी मैत्री घडवून देणारे असे हे कवी ना. धों. महानोर. निसर्ग हा महानोरांच्या कवितेचा केंद्रस्थानं आहे. त्यांच्या कवितेत विविध गंध आहेत, विविध ध्वनी आहेत, निसर्गाच्या स्पर्शाने फुललेला हा रोमांचित करणारा शृंगार आपल्याला दिसून येतो. अजिंठ्याच्या पायथ्याशी वसलेले पळसखेडे हे छोटेसे गाव, त्या काळात

दीड हजार लोकवस्तीचे, शेत शिवाराचे. अजिंठ्याला चिरकालीन अक्षरशिल्प आहे. महानोरांनी आपल्या अक्षरांनी असेच चिरस्मरणीय शिल्प घडविले. पळसखेडची लोकगीते त्यांनी जिव्हाळ्याने संकलित केली. 'पळसखेडची गाणी' त्यांनी आईला अर्पण केली. या अर्पणपत्रिकेत मिताक्षरांत महानोर सांगून जातात,

आईसाठी तुझी पुण्याई माझ्या शब्दांना साईसारखी आईविषयीची कवीची कृतज्ञतेची भावना ओथंबून आलेली आहे. 'रानातल्या कविता'मध्ये १९६० ते १९६६ मधील चौसष्ट कविता आहेत. त्यांना शीर्षके नाहीत. या सगळ्या कवितांत संपृक्त आशयाने भरून आलेले कवितेमन हे रान झालेले आहे.

ह्या शेताने लळा लाविला असा असा की,
सुखदुःखाला परस्परांशी हसलो-रडलो.

आता तर हा जीवच अवघा असा जखडला,
मी त्याच्या हिरव्या बोलीचा शब्द जाहलो.

ही कवीच्या अंतरात्म्यातील मंत्राक्षरे आहेत. एकदा का ती मर्मदृष्टीने समजून घेतली तर त्याच्या कवितेची कळ आकळते. त्यांच्या प्रतिभेचा सर्वांगस्पर्श या सर्व कवितांना झालेला आहे. महानोरांचे आपल्या भूमीविषयीचे उत्कट ममत्व, कृषिजीवनाविषयीचा जिव्हाळा, या दोहोंशी एकरूप होता होता निःसीम निष्ठेने केलेली अक्षरसाधना, त्यातून निर्माण झालेली अनोखी प्रतिमासृष्टी आणि उत्कट प्रेमानुभूतीचे विभ्रम या सर्वांच्या संयोगाने त्यांची काव्यसृष्टी फुली फुलून आलेली आहे.

ह्या नभाने ह्या भुईला दान द्यावे
आणि ह्या मातीतुनी चैतन्य गावे
कोणती पुण्ये अशी येती फळाला
जोंधळ्याला चांदणे लखडून जावे.

कृषिसंस्कृतीतील समृद्धी पाहून कविमनातील असीम सुख उलगडल्या जाते. अटळ आशय अभिव्यक्त होतो. निसर्गानुभूती आणि प्रेमानुभूती यांचे अद्वैत आढळते.

नदीकाठावर कर्दळीचे बन पाण्यात निथळे
बांधाला लागून गव्हाचे पिवळे शेत सळसळे
आंब्याच्या झाडाला मोहोराचा वास झेपता झेपेना
गाभुळ्या चिंचेला नवतीचा भार पोटी धरवेना
माघातले ऊन झेलताना अंग झाले निळेभोर
पाणमळ्यातील शेलाट्या वेलींचे नव्याने उभार
कोण्या बसंतीचे पाऊल लचके इथे चंद्रगौर
डोळ्यात फुलांच्या राजसपणाचा झडे शिणगार
कुसुंब्या रात्रीची स्वप्ने वेटाळून होते फुलवण
नदीकाठावर शब्दांत बावरे लयवेडी धून

चित्रदर्शी प्रतिमांनी भरगच्च झालेली ही विश्रब्ध सृष्टी आहे. तिचे तपशील अधोरेखित केले आहेत.

गडद जांभळं
भरलं आभाळ
मृगातल्या सावल्यांना बिलोरी भोवळ
खोलवरी चिंब बाई मातीला दर्वळ
जाईजुईचा
गंध मातीला
हिर्व्या झाडांचा, छंद गीताला
पानांवरती सांडले मोती
ओलं आभाळ आलं भेटीला

Scanned with OKEN Scanner

किंवा

काळ्या तांबड्या मातीचा

टिळा दगडधोंड्यांना

आम्ही भरला मरठ हिरव्या बिलोरी झांडाना

येता पावसाळी झड हाली गुलालात माती पंखपिवळ्या पानांत थेंब थेंब झाले मोती.

असा हा निसर्ग त्यांचा कवितेतून वारंवार डोकावत राहतो, वाचकाला एका वेगळ्या विश्वात नेत राहतो. पण अचानक पुढे ही निसर्गकविता थोडी बदलते आजच्या परिस्थितीला त्यांचा कवितेतून ते मांडतात.

पाणी पाणी पाणी आणि पाणी पाणी पाणी पाण्यविना दाही दिशा आम्ही अनवाणी

सौडोनि संसार गेलं देशांतरा कोणी

तळे मळे ओस झाले पाण्याच्या कारणी कुठा ना ओलवा कोणा सांगावी कहाणी..

. कविता ही बुद्धीने तपासून पाहण्याची गोष्ट नाही. तर अनुभवण्याची गोष्ट आहे. बहुतांश लोक कविता बुद्धीने तपासून पाहतात आणि आपापल्या परीने अर्थ लावतात. वास्तविक कविता ही अनुभवण्याचा प्रदेश आहे. आपण निसर्ग पाहायला जातो. आपण निसर्ग एकतर पाहतो वा घरात सजवतो. त्यात अनुभूती कुठेच नसते. महानोरांचे तसे नाही. कायम आनंदात असलेला निसर्ग त्यांच्या कवितेतून भेटतो. निसर्ग जगता जगता महानोर स्वतःच निसर्ग होऊन गेले आहे, अशा शब्दात एलकुंचवार नभं उतरू आलं, चिंब थरथरवलं

यांनी महानोरांबद्दल गौरवोद्गार काढले.

अंग झिम्माड झालं, हिरव्या बहरात

अशा वलंस राती, गळा

शपथा येती

साता जल्माची प्रीती, सरंल दिनरात

वल्या पान्यात पारा, एक गगन धरा

तसा तुझा उबारा, सोडून रीतभात

धरित्री वैशाखी उन्हाच्या झळा आनंदाने सोसत असते. कारण तिला पुरते माहिती असते की आता 'तो' येणार आहे. आपल्या तनमनावर थंडगार प्रसन्नतेचा शिडकावा करणारा, आपल्याला कवेत घेऊन बेभानपणे आनंदाचा उत्कट वर्षाव करणारा 'तो' येणार आहे, अगदी लवकरच. त्यासाठी या शुष्क उष्ण झळा काही काळ सोसायलाच हव्यात. त्याचे स्वागत करण्यासाठी, त्याला थेट भिडण्यासाठी ती कधीपासून वाट बघतीय चातकासारखी. अखेर 'तो' आला, क्षितिजाच्या कठड्यापाशी काळ्याकुट्ट मेघांचे दोन तुकडे दिसले. प्रारंभी काही चुकार थेंब आणि नंतर तुफान बरसात. तिचे अंग झिम्माड कधी झाले, हे तिलाही समजलेच नाही. इतकं उत्कट, एकरूप आणि अभिजात. ना.धो. म्हणोरांची कविता मराठवाड्याच्या मौखिक आणि लिखित परंपरेचे सत्त्व शोषून घेणारी आहे. कृषिसंस्कृतीमधील कष्टाळू हातांनी जमिनीची निगुतीने मशागत केली आणि दुसरीकडे मराठी कवितेच्या प्रांतात अक्षरसंपन्न क्षितिज निर्माण केले. समकालातील कवी-कवयित्रींनी तिच्याकडे अचंबित होऊन पाहिले एवढेच नव्हे, तर कविश्रेष्ठ बा. भ. बोरकर आणि कुसुमाग्रज यांसारख्या कवींनी तिचे भरभरून कौतुक केले. बा. भ. बोरकर यांनी 'सत्यकथा'मधून 'रानातल्या कवितें'ला मुक्त मनाने दाद दिली. तिची बलस्थाने अधोरेखित केली. प्रारंभीच्या काळात अशा पाठीवरचा हात उमलत्या प्रतिभेला कसा आवश्यक असतो, तो किती पोषक ठरतो हे ना. धों. नी दाखवून दिले.

पक्ष्यांचे लक्ष थवे

गगनाला पंख नवे

वाऱ्यावर

गंधभार

भरलेले ओचे,

झाडांतून

लदबदले

बहर कांचनाचे,

घन वाजत गाजत ये, थेंब अमृताचे.

या कवितेतील आत्मभाव, आशय आणि अभिव्यक्ती या दोन्ही अंगांनी विलोभनीय झालेला आहे.

पाऊसपाणी

चिंब निथळुनी

अंग अंग भिजलेले

घट्ट चोळीच्या गाठी रुतल्या

रुतून राजसझे

गाठ उकलि

हळु सावरता

मस्त झुलत मनमानी

तिच्या मनाचा मोर नाचतो

नाचत नभ मेघांनी

फांदी हले झुले

पानांतल्या थेंबांपाशी नभ उतरले नभ उतरले गर्द जांभळीचे झुले

झुलणाऱ्या फांदीपाशी पैंजण वाजले

मानव्यातून निसर्गाकडे महानोर तरल वृत्तीने पाहतात.

राघू उठून जाताना

गोरे भुरे पाय असे गाण्यात सांडले

निसर्गातील सौंदर्य मनाला आनंद देते. नभ, झाडी, पानांचे सळसळ, नदीकाठावरील

वृक्ष,त्यांची पाण्यात पडलेली सावली हे मानवी रूपातून महानोर कवितेतून अभिवेक्त करतात. निसर्ग आणि मानवी जीवन एकरूप होऊन जातात.

Scanned with OKEN Scanner

"धियो यो नः प्रचोदयात"

सुवर्णमहोत्सवी परंपरा

* वैशिष्ट्ये *

१) शिवाजी विद्यापीठ संलग्नित सर्व महाविद्यालयांमध्ये नविन नॅक प्रक्रियेनुसार ३.०५ या सर्वोच्च सी.जी.पी.ए. सह 'ए' मानांकन.

२) बी.ए., बी.कॉम., बी.एस्सी. यशवंतराव चव्हाण मुक्त विद्यापीठ मराठी, हिंदी, इंग्रजी, कमवा व शिका योजना.

३) कला, वाणिज्य, विज्ञान, एम.सी.व्ही.सी.(व्होकेशनल) विद्याशाखांचे ज्युनिअर महाविद्यालय, इंग्रजी मिडिअम स्कुल, बी. व्होक

४) सर्वोच्च शैक्षणिक गुणवत्ता, कला क्रीडा या क्षेत्रामध्ये धवल यशाची उज्वल परंपरा.

५) सुसज्ज इमारत, अत्याधुनिक प्रयोगशाळा, समृद्ध ग्रंथालय, प्रशस्त जलतरण तलाव, भव्य क्रिडांगण, विद्यार्थी व विद्यार्थिनींसाठी स्वतंत्र वसतिगृह, महिला सुविधा केंद्र, इनडोअर स्पोर्टस् हॉल, सर्वोच्च गुणवत्ता प्राप्त अनुभवी प्राध्यापकवृंद

बुक-पोस्ट

प्रति, _____

_____

_____

भोगावती शिक्षण प्रसारक मंडळाचे,
भोगावती महाविद्यालय, कुरूकली
ता.करवीर, जि.कोल्हापूर. ४१६००१.

Scanned with OKEN Scanner

भोगावती शिक्षण प्रसारक मंडळाचे,

भोगावती महाविद्यालय, कुरूकली

ता.करवीर, जि.कोल्हापूर. ४१६००१.

नॅक 'ए' मानांकन

भोगावती महाविद्यालय, कुरूकली मराठी विभाग व
शिवाजी विद्यापीठ मराठी शिक्षक संघ कोल्हापूर,
यांचे संयुक्त विद्यमाने
एकदिवसीय राष्ट्रीय चर्चासत्र

'मराठी साहित्यातील पर्यावरणाचे विविधांगी चित्रण'

बुधवार, दि.२९ नोव्हेंबर २०२३

प्रमाणपत्र

श्री./श्रीमती/प्रा./ डॉ. ज्ञानेश्वर को. गावते

श्री. सिद्धेश्वर महाविद्यालय, माजलगाव. बीड.

यांनी बुधवार दि.२९ नोव्हेंबर २०२३ रोजी भोगावती महाविद्यालय, कुरूकली मराठी विभाग आणि शिवाजी विद्यापीठ मराठी शिक्षक संघ कोल्हापूर यांचे संयुक्त विद्यमाने आयोजित केलेल्या 'मराठी साहित्यातील पर्यावरणाचे विविधांगी चित्रण' या राष्ट्रीय चर्चासत्रात अध्यक्ष/ उद्घाटक/ साधनव्यक्ती/ निबंधवाचक/ सत्राध्यक्ष/ सत्रसंयोजक/प्रतिनिधी म्हणून उपस्थित राहून सक्रीय सहभाग घेतल्याबद्दल हे प्रमाणपत्र प्रदान करण्यात येत आहे.

सादर केलेल्या शोधनिबंधाचे शीर्षक : ना. धों. महानोर यांच्या कवितेतील निसर्ग

प्रा.डॉ.सविता अशोक व्हटकर
समन्वयक व विभागप्रमुख

प्रा.डॉ.भरत जाधव
शिविम अध्यक्ष

डॉ.डी.ए.चौगले
प्र.प्राचार्य

Scanned with OKEN Scanner

YOGA: AN ELIXIR FOR HUMAN LIFE TO PREVENT DOPING

Dr. Umesh R.Sadegaonkar
Director Physical Education & sports
Shri. Siddheshwar Mahavidyalaya, Majalgaon, Dist. Beed.

Abstract:

Living a healthy life means to have blessed with mental and physical health. But unfortunately, modern man living in this materialistic world is running after name, fame and money. Increased stress and anxiety, depression are the features of modern life. In this race, he is losing his only his physical health but also is suffering from mental disturbances. There are very few people who are enjoying their physical and mental health. Many people are engulfed in worries, anxieties and frustration. Sometimes as a result they can commit suicide. Youth is becoming victim of all this modern lifestyle. And this has become a grave concern for the developing country like India. Increasing number of asylums is a result of people losing their mental health.

Key words: yoga, mental and physical illness, asanas, pranayam, elixir, doping

Introduction:

Yoga is a traditional method of meditation developed by the saints and sages of ancient India. They practiced Yoga as an effective method of controlling their mind and bodily desires and activities as well. The word 'Yoga' originates from Sanskrit. Yoga exercises have a holistic effect and bring body, mind, consciousness and soul into balance. The ancient saints of India discovered the laws of the material and spiritual realms and gained an insight into the connection within the Universe.

The present paper focuses on the importance of Yoga in human life which works as an elixir of life. Yoga is not a religion; it is a way of living that aims towards a healthy mind that only resides in healthy body. Man is a physical, mental and spiritual being. To maintain balance between oneself and environment is necessary for every human being. Nowadays greater emotional as well as physical needs are given priority. This a real reason why people suffer more stress, anxiety and also insomnia which is mainly due to improper lifestyle and lack of physical and mental exercise. Due to harmful side effects of drugs in the treatment of psychological disorder, the researchers seek non-pharmacological and non-invasive treatment

for these disorders. Therefore, we need proper methods and techniques for the attainment of health and harmony in life. Researchers suggest that Yoga as an intellectual and mental exercise improves mental health. In this respect Yoga acts as an elixir to one's health. The health of body is of fundamental importance in life. As the Swiss-born physician Paracelsus, very correctly said, "Health is not everything, but without health everything is nothing." So, to preserve and restore health is a challenge before mankind in this modern world. There are physical exercises named as Asanas, breath exercises named Pranayam, and relaxation techniques to attain physical and mental health.

Doping·

Doping is the use of performance enhancing drugs by competitors. Simply doping is the use of substances that are foreign to body or any substance that it is taken in abnormal quantity to increase the performance in an unfair manner. Doping is the violation of anti-doping rules set forth in Article 2.1 through Article 2.8 of the code. Doping is defined as an occurrence of one or more of the following anti-doping rules.

1. Presence of a performance enhancing drugs in a sample.
2. Use of a prohibited substance or method.
3. Refusing to submit sample after being notified
4. Failure to give where about in formation.
5. Tampering with doping control process.
6. Possession of a prohibited substance.
7. Trafficking of a prohibited substance.
8. Administrating a prohibited substance or method to an athlete.

Privation of Doping:

Many years ago, sages analyzed nature and cosmos through meditation. They explored the principles of the material and spiritual branch, the laws of nature, energy that works in the external as well as spiritual level. Yoga is suitable for people of all ages and requires no 'stunt' skill. On the other hand, Yoga provides the power of practicing Yoga to the physically weak, unfit and ill people. Today Yoga gets worldwide recognition and approval to be included in our daily life.

Food plays vital role in the maintenance of good health. What we eat influences body and psyche, our habits and qualities. Positive thinking, discipline and orientation, prayer as well as humble and kindness leads the path to self-knowledge and self-realization.

The researches proved that Yoga helps to promote a balanced development of all physical, mental and spiritual life. Yoga to live with greater awareness helps in attention,

focus and concentration especially for children. As Yoga means to join or to unite, it brings balance between body, soul and mind. Yoga helps to deal with our problems, worries and everyday demands. It enables us to understand ourselves, the purpose of life and develops our relationship with God. Yoga leads a spiritual path to knowledge and eternal bliss in the union of eternal self. It is that supreme and infinite principles. It is a ray of life that is universal cognizant that is awake.

Physical exercise along with Yoga can improve human health. The proper knowledge of Yoga with awareness can make people to avail health benefits of Yoga in our daily life. Physical exercise helps to restore the flexibility of body. And Yoga creates co-ordination between mind and body. A man who is suffering from depression, fatigue, anxiety, stress can attain relief from all these mental condition in life. Yoga proved to be mood boosting medicine for the people who succumbed before the problems of life. Yoga has power to stimuli and helps us to retain our brain activity. It reduces stress and boosts immune system.

Scientific research on Yoga claimed that Yoga helps in proper functioning of inner body organs as well. Regular Yoga in daily life can help for the proper blood circulation, blood sugar, blood pressure, pulse rate, and proper pumping of heart and lungs etc. Man can get relief from back-pain, arthritis, headache etc. If man is free from all these physical and mental ailments can have positive attitude towards life and the society in which he lives. Life without good health is a miserable condition, and it reflects its negative impact on family. Wealth and material possession without health cannot help us to enjoy happy life. So, good health is a valuable asset for one and all.

Social health is a capacity to be happy within oneself and to be able to make other happy. It means a caring and loving attitude towards other, communication skill, to be aware of the social responsibilities as a human being, and work and sacrifice for the cause of community and nation. Physically and mentally healthy people can help to maintain peace, law and order in social life. Such people enjoy personal and social life at best. They do not get victims of mob mentality. Many social ills are the outcome of lacking balance between mental and physical health. Personal and social problems can be faced with equanimity. Yoga is an antidote of physical and mental illness.

Aims of Yoga in life: 1) develops our physical health 2) mental health3) social health 4) spiritual health 5) helps in self-realization and divine realization within us.

These goals are attained by love, compassion, sympathy, empathy and helping nature for all living beings, respect for life, protection of nature and environment, a peaceful state of mind, vegetarian diet, pure thoughts, and positive lifestyle, physical, mental and spiritual practices,

tolerance for all nations, cultures and religions. To improve this kind of social performance and behaviour, yogic techniques are beneficial for all human beings. Positive thinking people around us have a great constructive and positive influence on our psyche as it develops our personality and character. These people find faith in themselves and become confident in their capabilities.

As Yoga is a form of mind-body fitness, it involves a combination of muscular activity and an internally directed mindful focus on awareness of self, breath and energy. The healing system through Yoga teaching and practice, underlies the basic principles. Human body comprises of many organs. Illness of any one of them affects the others and their functioning. So Yoga practice must be tailored accordingly. It helps in self-empowering the individuals. Yoga also plays an active role in the journey towards health. The quality and positive state of mind is crucial in the healing process.

Several special yogic programs have been developed from the basic exercises: Yoga for back-pain, Yoga for joints, Yoga for seniors, Yoga for children. Yoga is taught in Yoga Centre worldwide such as rehabilitation centre, fitness and sport centre, health institutions, adult educations centre etc.

Yoga is the root of spirituality, wisdom and the root of all religions. It outstrips religious boundaries and makes the way towards unity. To do precious and constructive work for community, to preserve nature and environment and work for maintain peace in the world, Yoga means to be active in the most positive vibe and to work for the welfare of all mankind.

Health is the state of mind and body in which one can sleep well, digest food at ease and free from any kind disease and uneasiness. If we add Yoga in our daily life, it helps in relieving mental and physical stress, helps in reducing muscle tension and enhance muscular strength, strain as well as inflammation, helps in building confidence, attention and concentration. It improves respiratory and cardiovascular function. It calms our nervous system. It makes individuals to be optimistic towards life.

Conclusion:

Yoga can play an effective role in reducing mental and body stress, anxiety, and depression with prevention of doping. It gives tranquility of mind and creates a sense of well-being. It is considered a complementary to medicine in the treatment of mental illness. So, there should be awareness among the people about the benefits of Yoga practice in daily

life. Medical professional should suggest yoga along with medical treatment. It is beneficial not only for affected people but for normal people also to live better relaxed and quality life.

Work cited:

Swami Sivananda 1999 The Divine Life Society P.O. Shivanandanagar—249 192 Dist Tehari-Garhwal, Uttar Pradesh, Himalayas, India.

Wod C. Mood change and perception of vitality: a comparison of the effects of relaxation, visualization and yoga. J R Soc Med 1993 May:86(5): 254-8.

Paramhans Swami Maheshwarananda. Yoga in Daily Life--The System. Vienna: Ibera Verlag/ European University Press; 2000.

Shivankar Sharma & Pranav Menon, A comparative study of the application of strict liability principles in sports: Critiquing anti-doping policies; examining illicit crowd, chanting and match fixing, Nirma University Law Journal: Volume-4, Issue 1 July 2014.

On the Occasion of Golden Jubilee Year of
Matsyodari Shikshan Sanstha, Jalna
1974 - 2024

ICSSR Sponsored

Two-Day Multidisciplinary International Seminar on
Role of Sports and Environment For Health

27-28 December 2023

Certificate

Certified that Prof/Dr./Mr.,/Mrs. Umesh R. Sadegaonkar

of Shri. Siddheshwar Mahavidhyalaya, Majalgaon

has participated/delivered key Note Address / delivered and invited lecture / presented a paper/poster entitled

Yoga An Elixir For Human Life to Prevent Doping

/ Chaired Session(s) Dr. Onkar Jogdand *in the ICSSR Sponsored*

International Seminar on "Role of Sports and Environment For Health"
On 27-28 December 2023
Conference Hall at Arts, Science and Commerce College Ambad, Dist. Jalna, Maharashtra State, India

Dr. Prashant Taur
Convener

Dr. Digambar Bhutekar
Co-Convener

Prof. Dr.Shahaji Gaikwad
Principal

"नारी शक्ति राष्ट्र शक्ति"

Celebrating International Women's Day

NSWLS/2023/P/.....

One Day NATIONAL SEMINAR on
WOMEN LEADERSHIP IN SPORTS: SCOPE AND CHALLENGES

Jointly Organised

Department of Physical Education & Sports and Women Empowerment Committee
Pandit Deendayal Upadhayay Education Society's
SHRI SANT SAVTA MALI GRAMIN MAHAVIDYALAYA, PHULAMBRI

Department of Physical Education & Sports
Lokseva Education Society's
ARTS & SCIENCE COLLEGE, GARKHEDA, AURANGABAD

In Collaboration with

Dept. of Sports, Yog Sicence & Physical Education, MGM University, Aurangabad and Physical Education Foundation of India
(Reg. by Ministry of Youth Affairs & Sport, Govt. of India)

18 March 2023 At Aryabhatta Hall, MGM University, Aurangabad

Certificate

This certificate is awarded to Dr. Umesh R. Sadegaonkar
from Shri. Siddheshwar Mahavidyalaya Majalgaon has Participated as Resource Person/ ✓
Chairperson/Co-chairperson/Participant in the National Seminar on Women Leadrship in Sports: Scope and Challenges held at Aryabhatta Hall, MGM University, Aurangabad (Maharashtra), on 18th March 2023.

18 March 2023

Dr. Sandeep Jagtap
Convener & Director of Sports
S.S.S.M.G. College, Phulambri

Dr. Asmaparvin Sayyad
Convener & Asst. Professor
Lokseva College, A'bad

Dr. Dinesh Wanjare
Asst. Prof. & Incharge, Dept. of Sports
MGM University

Dr. Liyakat Shaikh
Principal, Lokseva Arts & Science
College, Aurangabad

Dr. S.R. Takle
Principal, S.S.S.M.G College
Phulambri